घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

www.ghatatighatana.com अम्बिकापुर,वर्ष 22, अंक - 56- शुक्रवार 26- दिसम्बर 2025,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,डाक पंजीयन. क्रं. 13/Surguja DN/ 2023-2025

लखनऊ में मोदी ने राष्ट्र प्रेरणा स्थल का इनॉगरेशन किया...

हमने 370 की दीवार गिराई,आजादी के बाद सभी उपलब्धियां एक ही परिवार के नाम होती थीं : पीएम मोदी

लखनऊ,25 दिसम्बर 2025। पीएम नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को लखनऊ में राष्ट्र प्रेरणा स्थल का उद्घाटन किया। यहां उन्होंने जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी,पं. दीनदयाल उपाध्याय और अटल बिहारी वाजपेयी की मूर्तियों का अनावरण करके पुष्पांजलि अर्पित की। पीएम मोदी ने कहा...हमारी सरकार ने आर्टिकल 370 की दीवार गिराई। पहले एक परिवार की मूर्तियां लगती थीं,आज हर विभूति को सम्मान मिल रहा है। आजादी के बाद सभी उपलब्धियां एक ही परिवार के नाम होती थीं। भाजपा ने हर किसी के योगदान को सम्मान दिया। मोदी ने ये भी कहा कि आज नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा दिल्ली के कर्तव्य पथ है। अंडमान में नेताजी ने जहां पर तिरंगा फहराया,वहां उनकी प्रतिमा है। कोई नहीं भूल सकता है कि अंबेडकर की विरासत को मिटाने का प्रयास किया गया। दिल्ली के शाही परिवार ने इसे मिटाने का प्रयास किया। यहां सपा ने भी ऐसा किया,लेकिन भाजपा ने इसे मिटने नहीं दिया। पीएम मोदी बोले...11 सालों में भारत दुनिया का सबसे बड़ा मोबाइल निर्माता बना पीएम मोदी ने कहा...भारत में टेलीकाम को गति देने का काम अटलजी ने ही किया। आज भारत दुनिया में सबसे अधिक इंटरनेट और मोबाइल यूजर वाले देशों में से है। अटलजी जहां होंगे,वो इस बात से खुश होंगे। 11 वर्षों में भारत दुनिया के सबसे बड़ा मोबाइल निर्माता देश बन गया है। कनेक्टिविटी को लेकर उनके विजन 21 वीं सदी के भारत की मजबूती है। उनके समय में ही गांव-गावं तक सड़कें पहुंचाने का अभियान शुरू हुआ। स्वर्णिम चतुर्भुज अभियान भी शुरू हुआ। आज 8 लाख किमी सड़कें गांवों में बनकर तैयार है। हमारा यूपी एक्सप्रेस-वे के रूप में अपनी पहचान बना रहा है। अटलजी ने मेट्रो की शुरुआत की। आज मेट्रो लाखों लोगों का जीवन आसान बना रहा है।

पीएम मोदी ने कहा- सपा ने आंबेडकर की विरासत मिटाने का प्रयास किया

पीएम मोदी ने कहा– तीनों महापुरुषों के प्रेरणा और विजनरी कार्य विकसित भारत के आधार हैं। प्रतिमाएं हमें नई ऊर्जा से भर रही हैं। हमें यह नहीं भूलना है कि भारत में हर कार्य को एक ही परिवार से जोड़ने की प्रवृत्ति पनपी। पहले एक ही परिवार का गौरवगान होता था। उनकी ही मूर्तियां। यही सब चला। भाजपा ने एक परिवार की बंधक बनी इस प्रवृत्ति से देश को बाहर निकाला। भाजपा ने हर किसी के योगदान को सम्मान दिया। आज नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा दिल्ली के कर्तव्य पथ है। अंडमान में नेताजी ने जहां पर तिरंगा फहराया, वहां उनकी प्रतिमा। कोई नहीं भूल सकता है कि आंबेडकर की विरासत को मिटाने का प्रयास किया गया।

योगी ने कहा...हमारी सरकार अंत्योदय पर काम कर रही है...

सीएम योगी ने कहा...आज हम सबके लिए गौरव का क्षण है। डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने स्वतंत्र देश में एक देश,एक विधान,एक निशान और एक प्रधान का उद्घोष किया था। भारत माता के महान सपूत पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय विचार पर हमारी सरकार काम कर रही है। अटल जी के सपने को मूर्त रूप देने के लिए हमारी सरकार काम कर रही है। आधुनिक भारत के शिल्पकार हमारे पीएम नरेंद्र मोदी का आगमन लखनऊ की धरती पर हुआ है। डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी,पंडित दीन दयाल उपाध्याय और अटल बिहारी बाजपेई जी की मूर्ति का लोकार्पण पीएम के करकमलों से हुआ है। इन मूर्तियों के साथ भव्य म्यूजियम का भी उद्घाटन होने जा रहा है। पीएम की प्रेरणा से आत्मनिर्भर और विकसित भारत का वर्तमान स्वरूप देख रहे हैं तो कहीं न कहीं हम सबके प्रेरणा के रूप में श्यामा प्रसाद मुखर्जी, दीनदयाल उपाध्याय और पूर्व पीएम अटल बिहार वाजपेयी का मार्गदर्शन रहा है।

पीएम मोदी ने कहा...बीमा योजना से 55 करोड़ लोग जुड़े,25 हजार करोड़ क्लेम लिया...

पीएम मोदी ने कहा...2014 से पहले 25 करोड़ साथी सरकार की योजनाओं के दायरे में थे। आज 95 करोड़ साथी इस सुरक्षा कवच के दायरे में हैं। यूपी में बड़ी संख्या में इन योजनाओं का लाभ मिला है। जैसे खाते सिर्फ कुछ ही लोगों के पास होते हैं। वैसे बीमा भी कुछ ही संपन्न लोगों के पास था। हमारी सरकार ने अंतिम व्यक्ति तक बीमा पहुंचाने का बीड़ा उठाया। आज सरकार की स्कीम से 25 करोड़ से ज्यादा लोग जुड़े हैं। दुर्घटना के लिए प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना चल रही है। इससे 55 करोड़ लोग जुड़े हैं। ये लोग पहले बीमा के बारे में सोच नहीं पाते थे। इन

राजनाथ बोले...अब भारत की आवाज पूरी दुनिया सुनती है...

राजनाथ सिंह ने कहा...आज महंगाई दर 1 प्रतिशत से नीचे है। भारत की विकास दर 8 प्रतिशत से आगे है। पूरी दुनिया कान खोलकर सुनती है कि भारत क्या बोल रहा है। आज ये हैसियत भारत की दुनिया में बनी है। हमारे पीएम ने एक बहुत बड़ा काम गांव के लिए किया है। गरीबों व किसानों के लिए किया है। मनरेगा में धांधली थी। विकसित भारत जी रामजी नाम से नया विधेयक संसद में पारित किया है। अब 100 की बजाय 125 दिनों का काम मिलेगा। स्थाई काम गांवों में होगा।

कर्नाटक में स्लीपर बस में आग,10 जिंदा जले

चित्रदुर्ग के हिरियूर में लॉरी से टक्कर के बाद हादसा

चित्रदुर्ग,25 दिसम्बर 2025। कर्नाटक के चित्रदुर्ग में स्लीपर बस में टक्कर के बाद आग लग गई। हादसे में बस में सवार 10 से ज्यादा लोग जिंदा जल गए। हालांकि कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में यह आंकड़ा 12 और 17 बताया जा रहा है। हादसा एनएच-48 पर हिरियूर तालुक में हुआ। बस बेंगलुरु से गोकर्ण जा रही थी। रिपोर्ट्स के मुताबिक बस में 30 से ज्यादा यात्री थे। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि रात 2.30 बजे तेज रफ्तार लॉरी डिवाइडर तोड़कर दूसरी तरफ से जा रही प्राइवेट कंपनी की सीबर्ड ट्रांसपोर्ट की बस से टकरा गई। बस में तुरंत आग लग गई। उस समय यात्री सो रहे थे। इस कारण उन्हें खुद को बचाने का मौका नहीं मिला। पुलिस का कहना है कि ज्यादातर यात्रियों ने टिकट ऑनलाइन बुक किए थे। इससे पुलिस को उनके फोन नंबर मिल गए हैं। उनके परिवारों से संपर्क करने की कोशिश की जा रही है। जले हुए शवों की पहचान के लिए डीएनए टेस्ट करवाया जाएगा।

बस के ड्राइवर-क्लीनर ने कूदकर बचाई जान

ईस्ट जोन के इंस्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस रविकांत गौड़ा ने बताया कि बस के ड्राइवर और क्लीनर बच गए हैं,जबकि ट्रक के ड्राइवर-क्लीनर की मौत हो गई है। कई यात्रियों ने बस से कूदकर जान बचाई। घायल यात्रियों को तुमकुरु जिले में शिरा के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया है। दो यात्री गंभीर हैं। पीएम मोदी ने भी हादसे पर दुख जताया है। वहीं,मृतकों के परिजन को 2-2 लाख और घायलों को 50-50 हजार रुपए देने का ऐलान किया है। हादसे का शिकार हुई बस के ड्राइवर ने पुलिस को बताया है कि उसने सामने से आ रहे ओवरस्पीड ट्रक को देखकर अपनी गाड़ी को कंट्रोल करने की कोशिश की, लेकिन नाकाम रहा।

चश्मदीद बोला...स्लीपर बस के यात्री बचाने की गुहार लगा रहे थे...

हादसे के एक चश्मदीद ने बताया कि वे एक स्कूल बस में बेंगलुरु से दांडेली के लिए निकले थे। उसी समय यह हादसा हुआ। लॉरी अचानक सड़क पार से आई और स्लीपर बस से टकरा गई। स्कूली बच्चों वाली बस के ड्राइवर ने पीछे से बस को टक्कर मारी,दूसरी तरफ मुड़ा और सड़क से नीचे उतर गया। इसके कारण किसी को मामूली चोट भी नहीं आई। स्कूल बस के ड्राइवर के मुताबिक टक्कर के बाद स्लीपर बस के अंदर बैठे यात्री चिल्ला रहे थे। लॉरी ने बस के डीजल टैंक में टक्कर मारी, जिससे धमाका हुआ और बस में आग लग गई।

भारत को तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने में मध्य प्रदेश करेगा सर्वाधिक भागीदारी : अमित शाह

भोपाल,25 दिसम्बर 2025। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गुरुवार को कहा कि मध्य प्रदेश अब देश में सबसे तेज़ गति से विकास करने वाला राज्य बन गया है। बीते सालों की वैश्विक आर्थिक उतार-चढ़ाव से अलग रहकर अनेक चुनौतियों और संसाधनों के अभाव से उबरकर प्रदेश ने जिस रफ्तार से प्रगति की है, वह पूरे देश को अभिप्रेरित करती है। केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने कहा कि कृषि, उद्यानिकी,पशुपालन,सिंचाई, उद्योग,ऊर्जा,पर्यटन,स्वास्थ्य सुधार, खनन,फार्मा,नवकरणीय ऊर्जा और वृहद संख्या में आधारभूत अवसंरचनाएं,आज हर क्षेत्र में मध्य प्रदेश अग्रणी राज्यों की पंक्ति में खड़ा है। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश ने अपनी नई सोच,

उद्यमशीलता, प्रगतिशील दृष्टिकोण और नवाचारों के माध्यम से विकास के ऐसे मानक स्थापित किए हैं,जिनका अनुसरण अब अन्य राज्य भी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत जल्द ही विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है और निःसंदेह यह तय है कि इस ऐतिहासिक उपलब्धि में मध्य प्रदेश का योगदान सबसे बड़ा होगा। केंद्रीय गृह मंत्री गुरुवार को पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की 101वीं जन्म जयंती के विशेष अवसर पर ग्वालियर में आयोजित 'अभ्युदय मध्य प्रदेश ग्रोथ समिट' को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने प्रदेश के नेतृत्व और प्रशासनिक क्षमता की सराहना करते हुए कहा कि यहां निवेश के लिए अनुकूल वातावरण, स्पष्ट नीतियां और मजबूत इच्छाशक्ति दिखाई देती है। इन्हीं सभी प्लस फैक्टर्स से ही मध्य प्रदेश ने इस साल देश में बड़ी संख्या में निवेश प्रस्ताव प्राप्त किए हैं। इस मामले में मध्य प्रदेश ने देश में तीसरा स्थान हासिल किया है। कार्यक्रम में गृह मंत्री शाह ने दो लाख करोड़ रुपये से अधिक की निवेश लागत से प्रदेश के विभिन्न अंचलों में स्थापित होने वाली हजारों औद्योगिक एवं निर्माण इकाइयों का सामूहिक भूमिपूजन किया। उन्होंने मंच से 5,810 करोड़ रुपये लागत से औद्योगिक विकास परियोजनाओं एवं सड़क विकास कार्यों का लोकार्पण कर 860 वृहद औद्योगिक इकाइयों को 725 करोड़ रुपये की निवेश प्रोत्साहन सहायता राशि सिंगल क्लिक से वितरित की।

भारतीय सेना में सोशल मीडिया बैन खत्म,अब जवान देख सकेंगे फेसबुक और इंस्टाग्राम

नई दिल्ली,25 दिसम्बर 2025। रक्षा सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, अब भारतीय सेना के अधिकारियों और जवानों को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स देखने की पूरी छूट दे दी गई है। पिछले कई वर्षों से देश सेवा में तैनात जवान सुरक्षा कारणों से इन ऐप्स का उपयोग नहीं कर पा रहे थे। मंत्रालय ने अब यह स्पष्ट किया है कि सैनिक मनोरंजन और सूचना के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर सकते हैं। हालांकि, इसमें एक 'रीड-ओनली' (केवल देखने की) शर्त जोड़ी गई है। यानी जवान पोस्ट देख तो सकते हैं, लेकिन वे अपनी ओर से कोई भी सामग्री साझा नहीं कर सकेंगे। सोशल मीडिया पर इस प्रतिबंध की जड़ें जून 2020 की गलवान घाटी झड़प से जुड़ी हैं। 15-16 जून को वास्तविक नियंत्रण रेखा पर चीनी और भारतीय सैनिकों के बीच पिछले 45 वर्षों की सबसे भीषण हिंसक झड़प हुई थी, जिसमें भारत के 20 वीर जवान शहीद हुए थे। उस समय संवेदनशील सैन्य जानकारियों को लीक होने से बचाने और दुश्मन की जासूसी रोकने के लिए रक्षा मंत्रालय ने तत्काल प्रभाव से सभी सैनिकों के लिए दर्जनों ऐप्स और सोशल मीडिया के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया था।

राष्ट्रपति ने संताली भाषा में भारत के संविधान का किया लोकार्पण

नई दिल्ली,25 दिसम्बर 2025। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने गुरुवार को संताली भाषा में भारत के संविधान का औपचारिक लोकार्पण किया। यह संविधान संताली भाषा की अलचिकी लिपि में प्रकाशित किया गया है। राष्ट्रपति मुर्मु ने इस अवसर पर राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह को सबोधित करते हुए कहा कि संताली समुदाय के लिए यह गर्व और हर्ष का विषय है कि अब भारत का संविधान उनकी अपनी भाषा और लिपि में उपलब्ध है। इससे संताली भाषी लोग संविधान को सीधे पढ़ और समझ सकेंगे। उन्होंने कहा कि संविधान की मूल भावना और उसके अनुच्छेदों को मातृभाषा में समझने का अवसर मिलना लोकतंत्र को और सशक्त बनाता है। राष्ट्रपति ने कहा कि वर्ष 2025 अलचिकी लिपि के शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है और ऐसे महत्वपूर्ण वर्ष में संविधान का अलचिकी

लिपि में प्रकाशन अत्यंत सराहनीय है। उन्होंने इसके लिए केंद्रीय कानून एवं न्याय मंत्री और उनकी टीम की प्रशंसा की। अपने संबोधन में राष्ट्रपति ने कहा कि ओडिशा, झारखंड, पश्चिम बंगाल, असम और बिहार में रहने वाले संताली समाज के लोग अब अपनी मातृभाषा और लिपि में लिखे गए संविधान के माध्यम से अपने अधिकारों और कर्तव्यों को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे। समारोह में उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन और केंद्रीय कानून एवं न्याय राज्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

बांग्लादेश में एक और हिंदू युवक की पीट-पीटकर हत्या

7 दिन में दूसरी घटना...इससे पहले दीपू दास को मारकर जलाया था...

ढाका,25 दिसम्बर 2025। बांग्लादेश में एक बार फिर भीड़ ने हिंदू युवक को पीट-पीटकर मार डाला है। पुलिस के मुताबिक मृतक की पहचान 29 वर्षीय अमृत मंडल उर्फ सम्राट के तौर पर हुई है। पुलिस ने बताया कि अमृत को भीड़ ने जबरन वसूली के आरोप में मार डाला। वह होसेनडांगा गांव का ही निवासी था। पुलिस ने बताया कि अमृत के खिलाफ पांगशा पुलिस स्टेशन में दो मामले दर्ज हैं। इनमें एक हत्या का मामला भी शामिल है। इससे पहले 18 दिसंबर को ढाका के पास हिंदू युवक दीपू चंद्र दास की भीड़ ने हत्या कर दी थी। बाद में उसे पेड़ पर लटकाकर जला दिया था। डेली स्टार की रिपोर्ट के मुताबिक स्थानीय लोगों ने अमृत पर एक आपराधिक गिरोह बनाने का आरोप लगाया है। रिपोर्ट के मुताबिक वह लंबे समय से जबरन वसूली और अन्य आपराधिक गतिविधियों में शामिल था।

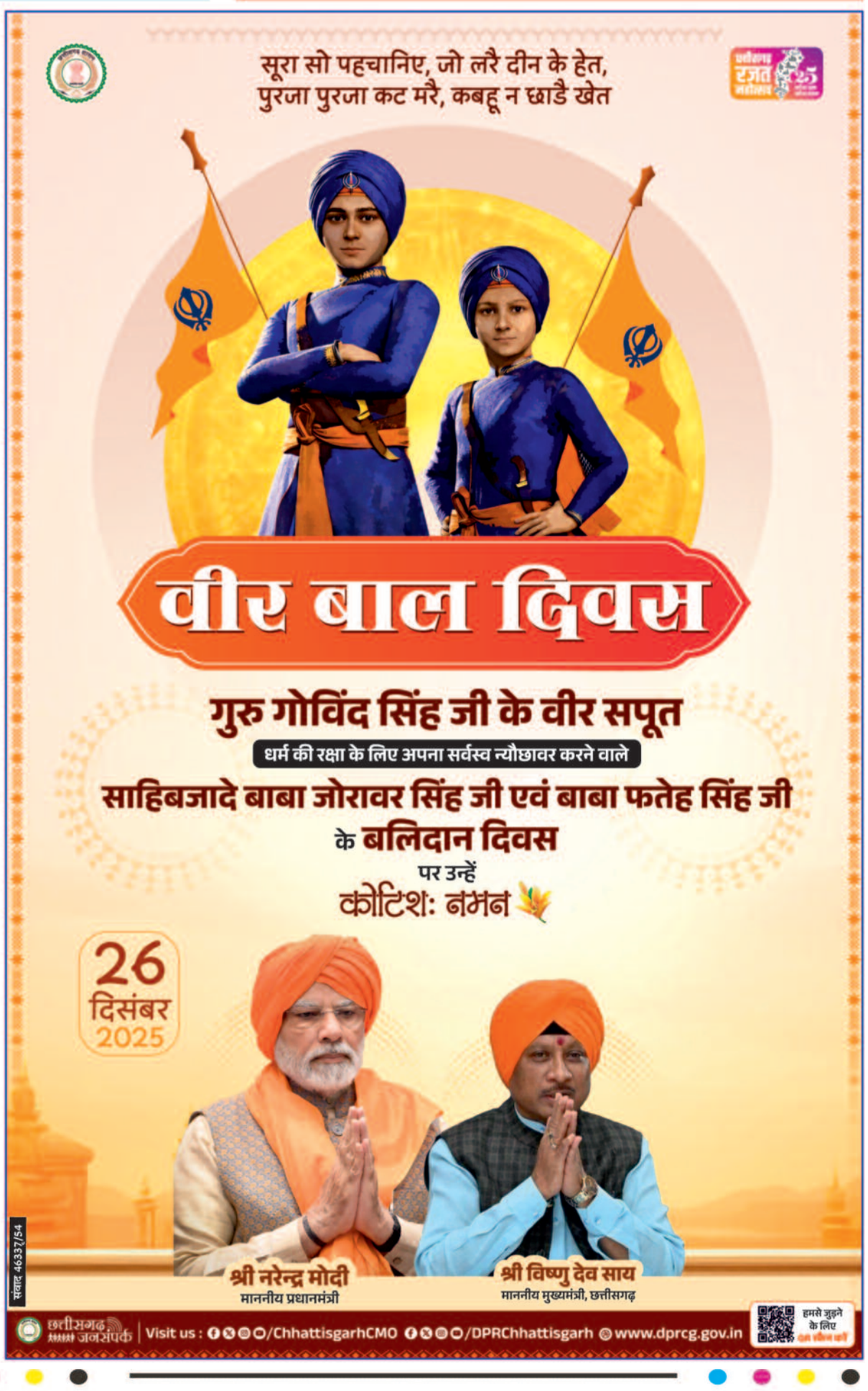

संपादकीय

दिल्ली में नहीं चलेगा चाइनीज प्लान

पेइचिंग ने वायु प्रदूषण पर नियंत्रण पाया...

दिल्ली के वायु प्रदूषण पर चीन के सुझावों को लेकर शोधकर्ताओं ने पेइचिंग मॉडल का अध्ययन किया है। चीन ने कम समय में वायु गुणवत्ता में सुधार किया है। भारत को चीन के अनुभवों से सीखना चाहिए, लेकिन अपनी परिस्थितियों के अनुसार समाधान खोजना होगा। पेइचिंग मॉडल की नकल भारत में संभव नहीं है।

दिल्ली के प्रदूषण को लेकर सोशल मीडिया पर आजकल खूब चुटकी ली जा रही है। चीनी दूतावास की एक प्रवक्ता का हालिया ट्वीट भी ऐसा ही है। उन्होंने कहा कि पेइचिंग को जिन तरीकों से वायु प्रदूषण से मुक्ति मिली,वे तरीके वह दिल्ली को बता सकती हैं। मगर यह बिना मांगे और बेकार का सुझाव है।

मैंने और भारत के कई दूसरे रिसर्चर्स ने भी पेइचिंग के प्रदूषण और उसमें आई कमी को देखा है। हमने पेइचिंग मॉडल का अध्ययन किया है। इसकी कामयाबी और सीमाओं को समझा है। सबसे पहले तो यह मानना जरूरी है कि चीन से आने वाली सूचना कभी पूरी नहीं होती और उस पर सख्त सरकारी नियंत्रण होता है।

पेइचिंग के बारे में जानकारी नहीं मिलती कि प्रदूषण नियंत्रण पर उसे कितना पैसा खर्च करना पड़ा। प्राइवेट सेक्टर पर कैसी जिम्मेदारी डाली गई? प्रदूषण कम करने के लिए नियमों का पालन कैसे कराया गया और इन सबकी सामाजिक लागत क्या रही?

इसमें कोई संदेह नहीं कि पेइचिंग ने कम वक्त में एयर क्वॉलिटी में काफी सुधार किया। भारत उसके अनुभवों से सीख सकता है और सीखना भी चाहिए, लेकिन इसका मतलब नकल करना नहीं है। हमें साफ तौर पर समझना होगा कि क्या लागू किया जा सकता है और क्या नहीं। यह भी देखना होगा कि भारत की समस्या किस तरह से अलग है और उसके लिए कौन-से समाधान चाहिए।

चीन ने पेइचिंग-तिआनजिन-हेबेई में एक साथ काम किया। यह इलाका करीब 2.2 लाख वर्ग किमी में फैला है। इसके तहत दो केंद्र शासित क्षेत्र हैं-पेइचिंग और तिआनजिन,जबकि हेबेई प्रांत में 11 शहर आते हैं। इसलिए इस काम के लिए आपसी तालमेल चुनौतीपूर्ण था,लेकिन वहां प्रशासनिक ढांचा सरल है इसलिए यह मुमकिन हो पाया।

दिल्ली में इसी तरह का मॉडल लागू करना कहीं ज्यादा मुश्किल है। यहां योजना को असरदार बनाने के लिए 150 किमी का एरिया शामिल करना होगा। इसमें दिल्ली पंजाब,हरियाणा,उत्तर प्रदेश,मध्य प्रदेश और राजस्थान के इलाके आ जाएंगे। दिल्ली में ही तीन स्तरों पर शासन चलता है-केंद्र, राज्य और स्थानीय निकाय। ऐसे में यहां नया प्रशासनिक मॉडल बनाना पड़ेगा।

पब्लिक ट्रांसपोर्ट और ईव्ही के मामले में भी पेइचिंग से कुछ सबक सीखा जा सकता है। उसने उत्सर्जन मानक कड़े कर दिए, साफ ईंधन अपनाया और पुराने वाहनों को हटा दिया। दिल्ली में भी ये उपाय किए जा रहे हैं, पर उतनी सफलता नहीं मिली है। एक बड़ा फर्क यह है कि पेइचिंग ने निजी वाहनों की बढ़ोत्तरी पर सख्ती से रोक लगाई। हमें पूरे एनसीआर में पेइचिंग की तरह विश्वस्तरीय पब्लिक ट्रांसपोर्ट और इलेक्ट्रिक गाड़ियों की संख्या बढ़ाने की जरूरत है।

स्कूल के बाहर खड़ी आधी आबादीः जब बेटियाँ बीच रास्ते लौट आती हैं...

छूटी हुई पाठशाला,छिनते सपनेः भारत की बेटियों की अधूरी शिक्षा,अधिकार से वास्तविकता तक : लड़कियों की स्कूली ड्रॉपआउट की क्रूर सच्चाई,स्कूल के बाहर खड़ी आधी आबादी : जब बेटियाँ बीच रास्ते लौट आती है, किताब,काँच और क़ैद : पितृसत्ता के साये में लड़कियों की शिक्षा,ड्रॉपआउट की दीवार के पार : भारत की बेटियाँ और शिक्षा का संघर्ष,अनुच्छेद 21 ए से आगे की लड़ाई : क्यों छूट जाती हैं बेटियाँ स्कूल से?, संविधान ने हक़ दिया,समाज ने रोका : लड़कियों की अधूरी स्कूली यात्रा,सायकिल, शौचालय और सुरक्षा : तीन कुंजियाँ,जो बेटियों को स्कूल में रोक सकती हैं,बाल विवाह, घरेलू बोझ और डरः लड़कियों की शिक्षा के अदृश्य दुश्मन, जब स्कूल नहीं, घर बनता है किस्मत : बेटियों की शिक्षा और भारतीय समाज।

प्रियंका सौरभ
आर्यनगर,हिसार,हरियाणा

भारत में लड़कियों की स्कूली शिक्षा की कहानी आज़ादी के बाद के विकासे वृत्तांत की सबसे जटिल और मार्मिक कड़ी है। संविधान का अनुच्छेद 21 हर बच्चे को 6 से 14 वर्ष तक निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार देता है, पर ज़मीनी तस्वीर बताती है कि जैसे जैसे कक्षा बढ़ती है, लड़कियों की संख्या कम होती जाती है और माध्यमिके उच्च माध्यमिक स्तर पर पहुँचते पहुँचते बड़ी संख्या में बेटियाँ स्कूल से बाहर हो चुकी होती हैं। यह केवल शैक्षणिक ढाँचे की विफलता नहीं,बल्कि गहरे बैठे सामाजिक पूर्वाग्रह, पितृसत्ता,आर्थिक अभाव और राज्य की अधूरी प्रतिबद्धताओं की संयुक्त देन है।

सबसे पहले बात स्कूलों की बुनियादी सुविधाओं की,जो लड़कियों के लिए शिक्षा के अधिकार और शिक्षा की वास्तविक उपलब्धता के बीच की सबसे कठोर दीवार बनकर खड़ी हैं। आज भी अनेक सरकारी स्कूलों में अलग,सुरक्षित और कार्यशील शौचालयों की कमी है;जहाँ शौचालय बने भी हैं,वहाँ साफ-सफाई, पानी और रखरखाव की स्थिति अक्सर बेहद खराब रहती है। किशोरावस्था में प्रवेश करने वाली बालिकाओं के लिए मासिक धर्म के दौरान स्वच्छ और सम्मानजनक व्यवस्था जीवन की बुनियादी ज़रूरत है लेकिन जब स्कूल इस ज़रूरत को नज़रअंदाज़ करते हैं, तो परिवार के लिए सबसे आसान विकल्प लड़की को घर बैठा देना होता है। स्वच्छ पेयजल, सेनेटरी नैपकिन की उपलब्धता,कचरा निस्तारण जैसी बातें कागज़ी योजनो दस्तावेज़ों में चाहे जितनी आकर्षक दिखें,ज़मीन पर उनकी कमी लड़कियों के हौसले को बारे बार तोड़ती है। यह वही उम्र है जहाँ शिक्षा आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण का रास्ता खोल सकती है, लेकिन अवसंरचना की कमी उसे 'ड्रॉपआउट' के आँकड़ों में बदल देती है।

दूसरा बड़ा कारक स्कूल तक पहुँच का है, जिसमें दूरी और सुरक्षा दोनों शामिल हैं। ग्रामीण इलाकों में माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय अक्सर गाँव से कई किलोमीटर दूर स्थित होते हैं। लड़के किसी तरह साइकिल या पैदल यह दूरी तय कर लेते हैं, लेकिन लड़कियों के मामले में हर किमी के साथ असुरक्षा,झिझक और जोखिम भी बढ़ जाता है। रास्ते में छेड़खानी, उत्पीड़न,सुनसान सड़कें,अपर्याप्त सार्वजनिक परिवहन और देर से घर लौटने का डर,माता-पिता के मन में यह धारणा गहरी कर देते हैं कि इतनी दूर भेजना सुरक्षित नहीं।जहाँ जहाँ साइकिल वितरण,छात्राओं के लिए सुरक्षित बस-सेवा,या क्लस्टर-स्कूल जैसा मॉडल ईमानदारी से लागू हुआ, वहाँ यह साफ़ दिखा कि परिवहन-सुरक्षा की समस्या हल होते ही लड़कियों की उपस्थिति,ट्रांज़िशन रेट और बोर्ड तक बने रहने के आँकड़े बेहतर हो जाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि सही नीतिगत हस्तक्षेप से दूरी नाम की बाधा को शिक्षा का रास्ता रोके बिना भी संभाला जा सकता है।

तीसरी वजह घर की चारदीवारी के भीतर छिपी है–घरेलू काम और देखभाल की ज़िम्मेदारियाँ। भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक संरचना में बेटा अक्सर भविष्य का कमाने वाला और बेटी परिवार की जिम्मेदारी मानी जाती है। गरीब और निम्न-मध्यवर्गीय परिवारों में माँ के साथ खाना बनाना, बर्तने कपड़े धोना,छोटे भाई बहनों की देखभाल करना,पानी लाना,खेत या दुकान में मदद करना–इन सभी कामों का सबसे आसान विकल्प लड़की ही बनती है। उसके स्कूल समय को लचीला समझा जाता है,जैसे ही घर का बोझ बढ़ता है,सबसे पहले उसकी पढ़ाई कटती है। सर्वेक्षण बारे बार दिखाते हैं कि बहुते सी लड़कियाँ पढ़ाई में रुचि नहीं की वजह से नहीं,बल्कि घर के काम और परिवारिक ज़िम्मेदारी के कारण स्कूल छोड़ती हैं, लेकिन डेटा में इसे अक्सर गलत ढंग से दर्ज कर दिया जाता है। यह अदृश्य श्रम,जो घर और समाज के पहियों को चलाता है, लड़की के अधिकारों और भविष्य के रास्ते में सबसे बड़े रोड़ा ब्लॉक में बदल जाता है।

चौथा निर्णायक तत्व है बाल विवाह और विवाह केंद्रित सामाजिक मानसिकता। आज भी अनेक समुदायों में यह मान्यता जीवित है कि लड़की की इज़्ज़त और भविष्य का असली उपाय उसे जल्दी ब्याह देना है, न कि लंबी शिक्षा देना। ज़्यादा पढ़ाई को कई बार बिगड़ने, पति न मानने या शादी देर से होने के ख़तरे के रूप में देखा जाता है। राष्ट्रीय स्तर के सर्वे साफ़ दिखाते हैं कि अशिक्षित या कम पढ़ी-लिखी लड़कियों में 18 वर्ष से पहले विवाह की संभावना कहीं अधिक होती है,जबकि उच्च शिक्षा पाने वाली लड़कियों में यह अनुपात बहुत कम है। यह दुष्चक्र बेहद क्रूर है–कम शिक्षा बाल विवाह को जन्म देती है और बाल विवाह आगे की शिक्षा की संभावना लगभग समाप्त कर देता है। शादी के बाद ससुराल की ज़िम्मेदारियाँ,जल्दी गर्भधारण का सामाजिक दबाव और स्वास्थ्य संबंधी जोखिम,लड़की को स्कूल से स्थायी रूप से बाहर कर देते हैं।

इन सबके ऊपर आर्थिक बाधाएँ एक तरह से सील का काम करती हैं। भले ही सरकारी स्कूलों में फीस नाममात्र की हो या न हो,लेकिन यूनिफॉर्म,जूते-चप्पल,किताबें,कॉपियाँ, परीक्षा शुल्क,ट्यूशन,परिवहन–इन अप्रत्यक्ष खर्चों का बोझ गरीब परिवारों के लिए बहुत भारी होता है। ऐसे परिवारों की आर्थिक गणित अक्सर बेटे के पक्ष में झुक जाती है,उन्हें लगता है कि लड़के की शिक्षा पर निवेश का प्रतिफल नौकरी या कमाई के रूप में मिलेगा,जबकि लड़की की पढ़ाई निवेश से अधिक दान जैसी समझी जाती है। यह सोच कई बार लड़कियों को बिल्कुल शुरुआती कक्षाओं से बाहर धकेल देती है,तो कई बार आठवीं, दसवीं या बारहवीं के मोड़ पर उनकी शिक्षा का धागा टूट जाता है।

इन कारणों का असर भारत के सार्वभौमिक विद्यालयीकरण के लक्ष्य पर गहरा और दूरगामी है। सबसे पहले तो यह संकट सतत विकास लक्ष्य 4 (सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) और लक्ष्य 5 (लैंगिक समानता) की दिशा में भारत की प्रगति को बाधित करता है। जब माध्यमिक स्तर पर ही लड़कियों की बड़ी संख्या स्कूल से बाहर हो जाती है,तो साक्षरता, नामांकन और परीक्षो उत्तीर्णता के आँकड़ों में स्थायी लैंगिक खाई बन जाती है। सार्वभौमिक शब्द केवल प्रवेश-सूची में दिखता है, लेकिन क्लासरूम और परीक्षा-परिणाम में नहीं। दूसरा असर अंतरपीढ़ी गरीबी पर पड़ता है। शोध लगातार दिखाते हैं कि शिक्षित माँ अपने बच्चों की सेहत, पोषण, टीकाकरण और शिक्षा में अधिक सजग और निवेशकारी होती है। जब लड़की स्वयं शिक्षा से वंचित रह जाती है, तो उसके लिए अगली पीढ़ी को शिक्षो केंद्रित जीवन देना बहुत कठिन हो जाता है। इस तरह एक पीढ़ी का ड्रॉपआउट,अगली पीढ़ी के अवसरों को भी सीमित कर देता है और गरीबी की जंजीरें टूटने के बजाय और मजबूत हो जाती हैं।

तीसरा बड़ा असर आर्थिक विकास और उत्पादकता पर दिखता है। यदि महिलाओं की श्रमबल भागीदारी,शिक्षा और कौशल के सहारे, पुरुषों के बराबर या उसके करीब पहुँच सके तो भारत की जीडीपी में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है लेकिन जब लाखों लड़कियाँ माध्यमिक स्तर से बाहर हो जाती हैं, तो यह संभावित मानवे पूँजी कभी विकसित ही नहीं हो पाती। देश की आधी आबादी हाफ-टाइम से पहले ही खेल से बाहर कर दी जाती है, और आर्थिक विकास अपनी प्राकृतिक ऊँचाई तक नहीं पहुँच पाता।

चौथा असर सामाजिके राजनीतिक सशक्तिकरण पर पड़ता है। शिक्षा सिर्फ रोज़गार का माध्यम नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक नागरिकता का सबसे बुनियादी औज़ार है। पढ़ी-लिखी लड़की स्वास्थ्य,प्रजनन,रोज़गार, बैंकिंग, डिजिटल तकनीक और मतदान जैसे निर्णयों में अधिक आत्मविश्वास से भाग लेती है। जब वह स्कूल छोड़ने पर मजबूर होती है,तो उसकी आवाज़ कमज़ोर हो जाती है, वह फैसलों की निर्माता की बजाय केवल प्रभावित होने वाली बनकर रह जाती है। स्थानीय निकायों में महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को वास्तविक शक्ति में बदलने के लिए जरूरी है कि गांव मोहल्ले की सामान्य लड़कियाँ भी कम से कम माध्यमिक स्तर तक की ठोस शिक्षा प्राप्त कर सकें।

इन नकारात्मक प्रभावों को संतुलित करने के लिए नीतियों को केवल कानूनों तक सीमित नहीं,बल्कि ज़मीन पर संवेदनशील बनाना होगा। सशर्त नकद अंतरण, छात्रवृत्ति,साइकिल और परिवहन योजनाएँ,सुरक्षित और लैंगिके समान स्कूल अवसंरचना, बाल विवाह के खिलाफ सख्त और ईमानदार अमल,समुदाय आधारित जागरूकता अभियान, और ओपन स्कूलिंग व डिजिटल शिक्षा के जरिए दूसरा मौका–ये सभी कदम तभी असरदार होंगे जब उनकी योजना और क्रियान्वयन के केंद्र में लड़की हो, न कि केवल छात्र का कोई लिंग निरपेक्ष, अमूर्त चित्र। लड़कियों का स्कूल से बाहर होना भारत की कहानी में एक अधूरा अध्याय नहीं, बल्कि एक ऐसी चेतावनी है जो बताती है कि जब तक हर बेटी बिना डर और बाधा के कम से कम माध्यमिक शिक्षा पूरी न कर सके, तब तक शिक्षित भारत का सपना आधा ही रहेगा।

कहां है इंसाफ?

उन्नाव बलात्कार मामले को लेकर एक बार फिर उठते सवाल

केशी गुप्ता
द्वारका दिल्ली

आज एक बार फिर देश भर में उन्नाव बलात्कार केस ने आग पकड़ ली है। सामने आए न्यायिक फैसले के विरुद्ध में देशभर में आक्रोश है इस फैसले के तहत उत्तर प्रदेश से भाजपा नेता रहे कुलदीप सिंह सेंगर को बलात्कार के मामले में बेल दे दी गई है। 4 जून 2017 को घटित उत्तर प्रदेश में 17 वर्षीय लड़की के सामूहिक बलात्कार का मामला जिसमें दोषी को सजा दे गई थी। आज सामने आए इस केस से संबंधित फैसले ने देशभर की आवाम को निराश किया है। इंडिया गेट पर पीड़िता और समर्थकों सहित धरना प्रदर्शन किया जा रहा है। सवाल ये उठता है कि सालों के इंतजार के बाद बलात्कार जैसे जघन्य अपराध को लेकर दिया गया ये कथित फैसला कितना न्यायपूर्ण है ? क्या इस तरह के फैसले न्याय प्रणाली पर सवाल खड़ा नहीं करते ? ये कहना गलत नहीं होगा कि इस तरह के फ़ैसले ही समाज में बढ़ते अपराधों को बढ़ावा देते हैं। तथाकथित तथ्यों पर आधारित इस मामले में दो अलग आरोप पत्र दायर किए गए थे।पहला 11 जुलाई 2018 को बीजेपी नेता कुलदीप सिंह सेंगर पर बलात्कार के आरोप में और दूसरा 13 जुलाई 2018 को जिस में अन्य लोगों के साथ पीड़िता के पिता को आरोपी बता दायर किया गया। कुछ समय पश्चात ही पीड़िता की पिता की नायक हिरासत में मृत्यु हो गई। 28 जुलाई 2019 को एक ट्रक टक्कर में पीड़ित बुरी तरह से घायल हुई और उसके परिवार के दो सदस्यों की मौत हो गई। परिवार द्वारा न्याय की मांग की गई तथा 31 जुलाई 2019 को अदालत ने इस केस को स्वीकार किया। पीड़ित लड़की और परिवार का दावा है कि उन्हें समय-समय पर भाजपा नेता कुलदीप सिंह सेंगर के वकील द्वारा धमकी दी जाती रही है। 20 दिसंबर 2019 को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 25 लाख का जुर्माना और आजीवन उम्र कैद की सजा सुनाई गई। बड़ा सवाल यह उठता है कि आखिर ऐसा क्या हुआ की 6 साल के अंतराल में इस फैसले को बदल दिया गया? 23 दिसंबर 2025 दिन मंगलवार को हाई कोर्ट की एक बेंच ने कुलदीप सिंह सेंगर की सजा को निर्लंबित कर 15 लाख रुपये के निजी मुचलके और समान राशि के तीन ज़मानतदार पेश करने का निर्देश दिया । इसके बाद से देश भर में लोगों के बीच रोष देखा जा रहा है। अवाम का सरकार और न्याय व्यवस्था की तरफ यह सवाल है कि आखिर क्यों कर एक बलात्कारी की सजा को माफ कर दिया गया? क्या नेता और आम आदमी के लिए न्याय व्यवस्था अलग-अलग है? हम उम्मीद करते हैं कि देश में उठने वाले इस रोष को संतुष्ट करने के लिए सही फैसला और कदम उठाए जाएंगे ताकि देश की जनता न्यायिक प्रणाली पर विश्वास कायम रख सके और पीड़िता को इंसाफ मिले।

1971 के युद्ध में पाकिस्तान पर भारतीय सेना की निर्णायक जीत का स्मरण

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़
हरदा,मध्य प्रदेश

26 दिसंबर भारतीय इतिहास में 1971 युद्ध के सफल समापन का प्रतीक है, जब पूर्वी पाकिस्तान में युद्धविराम की घोषणा हुई और बांग्लादेश की स्वतंत्रता पक्की हो गई। हालांकि भारत सरकार ने आधिकारिक विजय दिवस 16 दिसंबर को घोषित किया,जिस दिन ढाका में 93,000 पाकिस्तानी सैनिकों का आत्मसमर्पण हुआ 26 दिसंबर उस विजय की पूर्णता और शांति स्थापना की स्मृति का दिन है। यह तिथि सैन्य नायकों की वीरता के साथ मानवीयता का संदेश भी देती है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बांग्लादेश मुक्ति का चरम1971 का भारत-पाकिस्तान युद्ध पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी सेना की क्रूरता के खिलाफ जन-विद्रोह से प्रारंभ हुआ। लाखों शरणार्थियों के संकट ने प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को हस्तक्षेप के लिए प्रेरित किया। 3 दिसंबर को पाकिस्तानी हमले के बाद भारतीय सेना ने 13 दिनों में अभूतपूर्व सफलता हासिल की। 16 दिसंबर को लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा ने लेफ्टिनेंट जनरल ए.ए.के. नियाजी का आत्मसमर्पण स्वीकार किया, जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद का सबसे बड़ा सैन्य आत्मसमर्पण था। 26 दिसंबर को युद्ध की औपचारिक समाप्ति घोषित हुई, जिसने भारत की सैन्य व कूटनीतिक श्रेष्ठता स्थापित की।इस घटना ने न केवल बांग्लादेश को जन्म दिया, बल्कि संयुक्त राष्ट्र में भी भारत की भूमिका को सम्मान दिलाया।26 दिसंबर का विशेष महत्वआधिकारिक विजय दिवस 16 दिसंबर को फोर्ट विलियम (कोलकाता) और विजय चौक (दिल्ली) पर मनाया जाता है, लेकिन 26 दिसंबर कई सैन्य इकाइयों, स्कूलों और सांस्कृतिक मंचों पर आत्मसमर्पण की सटीक स्मृति के रूप में स्मरण किया जाता है। भारतीय सेना ने युद्धोत्तर बांग्लादेश में सहायता प्रदान की, जो शांति की मिसाल है। परमवीर चक्र विजेता लेफ्टिनेंट अरुण खेत्रपाल और अन्य नायकों की गाथाएं युवाओं को देशभक्ति सिखाती हैं।

26 दिसंबर हमें सतर्कता, शांति और राष्ट्र निर्माण का संकल्प दिलाता है। उन वीरों को नमन, जिन्होंने विजय है का उद्घोष किया,भारत माता की जय!

कविता

यह दुनिया है दोस्तों

प्रोफेसर शाम लाल कौशल
रोहतक,हरियाणा

यह दुनिया है दोस्तों,अजब गजब की दुनिया
कहीं नवजात शिशु और कहीं मौत का मातम!
कुछ रुकता नहीं दुनिया यूं ही चलती रहती है!
यह दुनिया है दोस्तों,अजब गजब की दुनिया
कोई शीश महल में रहता है,कोई झोपड़ी में
किसी को कोई फर्क पड़ता ही नहीं दोस्तों!
कुछ रुकता नहीं,दुनिया यूं ही चलती रहती है !
किसी अबला का गुंडों द्वारा गैंग रेप हो जाता है
पुलिस आती है पीड़िता का बयान दर्ज करती है
पीड़िता तथा पब्लिक न्याय की उम्मीद करते हैं
लेकिन मुल्जिम रिश्वत से जेल से बाहर आता है
कुछ नहीं होता,सब पहले की तरह चलता रहता है।
देखा ना कितनी अजब गजब की दुनिया है यह।
कुछ हो जाए यह दुनिया इसी प्रकार चलती रहती है।
मिलावटी दूध, नकली दवाइयां,प्रदूषण से मरते लोग
इन सबको रोकने के लिए सरकारी अधिकारी होते हैं
इन्हें रोकने का दिखावा करते हैं, लेकिन सब चलता है।
बेचारा गरीब और निरापराध तो सज़ा भुगतता है
और अपराधी लोग शरेआम अपराध करते रहते हैं
यह दुनिया है दोस्तों,बड़े ही अजब गजब की है यह दुनिया।

बुनियादी बदलाव से बचती कांग्रेस

आशुतोष झा

अभी हाल में दो तस्वीरें आई,जो काफी चर्चा में रहीं। एक में कांग्रेस की सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला समेत पक्ष-विपक्ष के कई नेताओं के साथ मुस्कुराते हुए चाय की चुस्की ले रही हैं। दूसरी तस्वीर उसके एक दिन पहले आई, जिसमें प्रियंका सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी के साथ हिमाचल की सड़कों को लेकर और केरल में अपनी प्राथमिकताओं पर चर्चा कर रही हैं। वैसे तो संसदीय परंपरा में ये सामान्य घटनाएं हैं,लेकिन इसका संदेश गूंजता है। विपक्ष सलाह दे सकता है, शक्ति हो तो दबाव बना सकता है, लेकिन सरकार को अस्वीकार नहीं कर सकता, जिसकी कोशिश खासतौर से मुख्य विपक्ष की ओर से होती रही है। इससे शायद ही कोई इन्कार करे कि एक मोड़ पर जाकर नेतृत्व ही अहम हो जाता है। वही पार्टी की दिशाएं तय करने लगता है, उसकी विश्वसनीयता और अविश्वसनीयता से पार्टी की पहचान होने लगती है। वही पार्टी को हराता और जिताता है और भविष्य तय करने लगता है। वर्ष 2025 इस सवाल का बार-बार जवाब देते दिखा। इस वर्ष दो अहम चुनाव हुए। एक देश की राजधानी दिल्ली में और दूसरा हमेशा से राजनीति का अखाड़ा बने रहे बिहार में। 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद राहुल गांधी नेता विपक्ष तो बने ही, पार्टी के अंदर भी उन्होंने प्रभावी नेता के रूप में खुद को स्थापित कर लिया। इन दोनों राज्यों में चुनाव के बाद फिर से स्पष्ट हो गया कि खुद को अपग्रेड करने की उनकी क्षमता कहीं न कहीं लुप्त है। वे कांग्रेस नेता से खुद को नेता प्रतिपक्ष के रूप में अपग्रेड नहीं कर सके। कारण है संवाद की कमी, जिद और अकड़।

सूचना

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

-सम्पादक

गोचर भूमि पर पूर्व विधायक का कब्जा, राजस्व विभाग की चुप्पी

राजनीतिक दबाव और अंततः अपर कलेक्टर का सख्त फैसला

गोचर भूमि को निजी बताकर बनाया गया अवैध पट्टा...अपर कलेक्टर न्यायालय ने किया निरस्त

- बलरामपुर से सामने आया चौंकाने वाला मामला
- पूर्व विधायक का कब्जा उजागरः राजस्व विभाग वर्षों तक बताता रहा गोचर को निजी
- राजनीतिक प्रभाव में दबा रहा मामला,6 साल बाद न्यायालय से टूटा अवैध पट्टा
- सरगुजा सेटलमेंट में गोचर दर्ज...फिर भी निजी स्वामित्व का खेल चलता रहा...
- 2019 से अवैध कब्जा, 2025 में फैसला राजस्व रिकॉर्ड की सच्चाई आई सामने...

-अनिल सिन्हा-

बलरामपुर,25 दिसम्बर 2025 (घटती-घटना)।

बलरामपुर का यह मामला एक आईना है जिसमें राजस्व विभाग की कमजोरी, राजनीतिक हस्तक्षेप, और आम जनता की वर्षों की लड़ाई स्पष्ट दिखाई देती है, अपर कलेक्टर न्यायालय का फैसला यह साबित करता है कि अगर दबाव हटे, तो कानून आज भी जिंदा है,अब सवाल सिर्फ़ इतना है क्या सिस्टम भी इस फैसले से कुछ सीखेगा, या अगली गोचर भूमि किसी और रसूखदार के हवाले कर दी जाएगी? छत्तीसगढ़ के बलरामपुर-रामानुजगंज जिले से एक ऐसा मामला सामने आया है, जिसने न सिर्फ़ राजस्व विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं, बल्कि यह भी उजागर कर दिया है कि किस प्रकार राजनीतिक प्रभाव के आगे वर्षों तक सरकारी तंत्र नतमस्तक बना रहा, यह मामला ग्राम मानपुर, तहसील शंकरगढ़ की उस भूमि से जुड़ा है, जो सरगुजा सेटलमेंट 1944-45 के अनुसार स्पष्ट रूप से गोचर (शासकीय चरागाह) भूमि के रूप में दर्ज है, किंतु वर्षों तक उसे निजी भूमि बताकर एक राजनीतिक व्यक्ति–पूर्व विधायक–द्वारा कब्जा कर लिया गया और अवैध पट्टा तक बनवा लिया गया।

मामले की पृष्ठभूमि : 2019 से चला आ रहा विवाद : दस्तावेज़ों के अनुसार, विवादित भूमि खसरा नंबरः 228/5, रकबाः 0.372 हेक्टेयर, स्थितिः ग्राम मानपुर, तहसील शंकरगढ़, जिला बलरामपुर-रामानुजगंज यह भूमि सरगुजा सेटलमेंट के रिकॉर्ड में गोचर मद में दर्ज है, बावजूद इसके वर्ष 2019 से भूमि पर कब्जा किया गया, वहां कच्चा मकान/निर्माण कराया गया, राजस्व रिकॉर्ड में हेरफेर कर निजी पट्टा दर्शाया गया सबसे चौंकाने वाली बात यह रही कि शिकायतों के बावजूद राजस्व विभाग के अधिकारी लगातार इसे निजी भूमि बताते रहे।

राजस्व विभाग की भूमिका : अज्ञानता या संरक्षण? यह प्रश्न अब बेहद गंभीर हो चुका है जब सरगुजा सेटलमेंट 1944-45 में भूमि गोचर दर्ज थी, जब 1954-55 के बाद का तहसील अभिलेख उपलब्ध ही नहीं था, जब पट्टे से संबंधित कोई मूल दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किया गया तो फिर किस आधार पर इसे निजी भूमि बताया जाता रहा? किसके दबाव में राजस्व अधिकारी आंख मूंदे बैठे रहे? क्या यह महज़ लापरवाही थी या राजनीतिक संरक्षण का परिणाम? दस्तावेज़ बताते हैं कि 1990-91 के कथित नामांतरण की मूल प्रति उपलब्ध नहीं, नामांतरण पंजी में क्रमांक-07 का उल्लेख तो है, पर न्यायालयीन संदर्भ नहीं, किसान किताब और अन्य अभिलेखों में स्पष्ट विरोधाभास था।

शिकायत,जांच और न्यायालय का हस्तक्षेप : लगातार शिकायतों के बाद मामला अपर कलेक्टर न्यायालय,राजपुर (शंकरगढ़) पहुँचा,जांच के मुख्य बिंदु राजस्व निरीक्षक की रिपोर्ट में यह तथ्य सामने आए,भूमि गोचर मद में दर्ज है,किसी भी स्तर पर वैध पट्टा जारी होने का प्रमाण नहीं,1990-91 का कथित पट्टा फर्जी प्रतीत होता है, कब्जा शासकीय भूमि पर अवैध रूप से किया गया।

अपर कलेक्टर का ऐतिहासिक फैसला

दिनांक 12/12/2025 को अपर कलेक्टर न्यायालय ने अवैध पट्टा निरस्त किया,राजस्व रिकॉर्ड में सुधार के आदेश दिए,स्पष्ट कहा कि यह भूमि शासकीय गोचर भूमि है, निजी स्वामित्व का दावा अवैध व निराधार है, यह फैसला केवल एक व्यक्ति के खिलाफ नहीं,बल्कि उस पूरे सिस्टम के खिलाफ है,जिसने वर्षों तक गलत को सही साबित करने की कोशिश की।

राजनीतिक व्यक्ति और दोहरे मापदंड- यह भी एक सच्चाई है कि आम ग्रामीण अगर गोचर भूमि पर कब्जा करे, तो तत्काल बेदखली, लेकिन जब कब्जाधारी राजनीतिक रसूख वाला हो, तो फाइलें दब जाती हैं, भूमि 'निजी' घोषित कर दी जाती है, शिकायतकर्ता को वर्षों तक भटकाया जाता है यही कारण है कि यह मामला केवल भूमि विवाद नहीं, बल्कि लोकतंत्र, समानता और कानून के राज का प्रश्न बन जाता है।

गोचर भूमि बची, पर भरोसा कब लौटेगा?- अपर कलेक्टर का यह निर्णय निश्चित रूप से स्वागत योग्य है, लेकिन सवाल अभी भी बाकी हैं जिन अधिकारियों ने गोचर भूमि को निजी बताया, उन पर क्या कार्रवाई होगी? क्या अवैध कब्जे के वर्षों की जवाबदेही तय होगी? क्या राजनीतिक प्रभाव से संचालित ऐसे मामलों की स्वतंत्र जांच होगी? अगर जवाब 'नहीं' है,तो यह फैसला भी केवल फाइलों में दर्ज एक आदेश बनकर रह जाएगा।

चुराकर धान बेचने का आरोप लगाकर युवक पर धारदार हथियार से जानलेवा हमला

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,25 दिसम्बर 2025 (घटती-घटना)।

रघुनाथपुर चौकी क्षेत्र के लमगांव में 23 दिसंबर की शाम को धान चोरी कर बेचने का आरोप लगाकर एक व्यक्ति ने युवक पर धारदार हथियार से हमला कर दिया। युवक मौके पर बेहोश हो गया। उसका इलाज शहर के निजी अस्पताल में चल रहा है। पीड़ित की बहन ने मामले की रिपोर्ट गांधीनगर थाने में दर्ज कराई है।

जानकारी के अनुसार सूरज मिंज ग्राम लमगांव पुलिस चौकी रघुनाथपुर का रहने वाला है। वह 23 दिसंबर की शाम 6 बजे बाइक अपने दोस्त दीपक उरांव को उसके घर छोडने गया था। दीपक बाइक से उतरकर घर के अंदर चला गया। इस दौरान उसके पिता पीयर साय घर से बाहर निकला और सूरज को बोला तुम धान चुराकर बेचते हो कह कर विवाद करने लगा। इस दौरान पीयर साय ने धारदार हथियार से उसके गला पर जानलेवा हमला कर दिया। गले में गंभीर चोट लगने से वह मौके पर बहोश हो गया। सूचना पर सूरज के चाचा, भाई व बहन संध्या मिंज मौके पर पहुंचे और उसे इलाज के लिए रघुनाथपुर अस्पताल लेकर गए। यहां चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार के बाद उसे अंबिकापुर रेफर कर दिया। परिजन उसे अंबिकापुर स्थिति निजी अस्पताल में भर्ती कराया है। उसे 19 टांके लगे हैं। संध्या ने मामले की रिपोर्ट गांधीनगर थाने में दर्ज कराई है। गांधीनगर पुलिस जीरो पर अपराध दर्ज कर लुण्ड्रा थाने को विवेचना के लिए भेज दिया है।

क्रिसमस समारोह में बड़ी संख्या में मसीही समाज ने लिया हिस्सा,येशु के संदेश को किया साझा

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,25 दिसम्बर 2025 (घटती-घटना)।

प्रभु येशु के जन्म क्रिसमस के शुभ अवसर पर अंबिकापुर के नवापारा स्थित महा गिरजाघर में विशेष प्रार्थना सभा आयोजित की गई। रात्रि 10 बजे से धार्मिक अनुष्ठान प्रारंभ हुई जो देर रात तक चली। रात्रि 12 बजे बालक येशु के जन्म के साथ ही चर्च के घंटे बजे और आतिशबाजी शुरू हो गई। चरनी आशीष के सांथ धार्मिक अनुष्ठान की शुरुवात हुई। बिशप डॉ. अंतोनीस बड़ा की अगुवाई में फादर जार्ज ग्रे कुजूर के साथ समस्त धार्मिक अनुष्ठान मिस्सा पूजा सम्पन्न हुई। इस अवसर पर समुदाय को संबोधित करते हुए अपने संदेश में बिशप डॉ अंतोनिस बड़ा ने कहा कि इस वर्ष का क्रिसमस जागरण एक साधारण जागरण नहीं है यह एक अद्भुत एवं अनोखा जागरण है आज हम यीशु के 2025 वां वर्षगांठ मना रहे हैं। हम ईश्वर को धन्यवाद देते हैं कि उसने हम मानव को बचाने के लिए पाप के जाल से छुड़ाकर स्वर्ग ले जाने के लिए अपने इकलौते बेटे यीशु को कुंवारी माता द्वारा इस संसार में भेजा। अतः खीस्त जयंती सारी मानव जाति के लिए प्रेम शांति आनंद का पर्व है। आइये इस समारोह में सहभागी होने के लिए हमने आपको तैयार करें और सारे गुनाहों के लिए माफी मांगे और अपने मन को शुद्ध करें। इस क्रम में आगे सुसमाचार का वाचन भी किया गया। इस दौरान पारा टोला से आए समाज के लोगों ने पवित्र बाइबिल पाठ का वाचन किया गया। पहला पाठ का वाचन कुंती एक्का भगवानपुर व दूसरे पाठ का वाचन डेविड एक्का ने पवित्र पाठ का वाचन कर येशु के संदेशों को दिया। रात्रि प्रार्थना सभा के दौरान फा.अनुरंजन व फा. जॉन जयसवाल की अगुवाई में युवक युवतिओं द्वारा अनुष्ठान के बीच-बीच में भक्तिमय गीतों से ऐसा समा बांधा की लोग भक्तिमय गीतों में रम गए। कार्यक्रम के अंतिम चरण में परम प्रसाद का वितरण व बालक येशु का चुंबन किया गया। बड़े बुजुर्गों के लिए घर में बैठ कर लाइव प्रसारण के माध्यम से धार्मिक अनुष्ठान में शामिल होने की निःशुल्क व्यवस्था जेरीन जोसेफ ने उपलब्ध कराई थी।

कार्यक्रम के दौरान पूर्व महापौर डा.अजय तिर्की, फा. थेओडोर लकड़ा, फा. ज्ञान लकड़ा, फा. पीटर, फ्रांसिस केरकेट्टा, अलीशा अंशु बड़ा, रुबेन तिग्गा, डेविड एक्का, संतोष किस्पोट्टा, राजेन्द्र तिग्गा, हॉली क्रास, उर्सुलाइन, संतअन्ना, मिशनरीज आफ चैरिटी सिस्टर्स व बड़ी संख्या मसीही समाज के लोग मौजूद थे।

जशपुर के युवाओं के लिए अवसर नवसंकल्प में निःशुल्क सीजीपीएससी टेस्ट-सीरीज शुरू

जिला प्रशासन की पहल से 18 टेस्टों की तैयारी योजना

-संवाददाता-

जशपुरनगर,25 दिसम्बर 2025 (घटती-घटना)।

नवसंकल्प शिक्षण संस्थान,जशपुर में आगामी छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग प्रारंभिक परीक्षा 2025 के लिए निःशुल्क टेस्ट-सीरीज़ शुरू की गई है। यह पहल जिला प्रशासन के सहयोग से की गई है, ताकि जिले के युवा प्रतियोगी परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन कर सकें। सीजीपीएससी 2025 की अधिसूचना पहले ही जारी हो चुकी है और इस वर्ष कुल 265 पदों के लिए भर्ती प्रस्तावित है। प्रतियोगी छात्रों की तैयारी को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से नवसंकल्प में 17 दिसम्बर 2025 से टेस्ट-सीरीज़ प्रारंभ कर दी गई है, जिसका अंतिम चरण 14 फरवरी 2026 को पूरा होगा। इस टेस्ट-सीरीज़ में कुल 18 टेस्ट शामिल किए गए हैं। पहले चरण में 10 टेस्ट विभिन्न टॉपिक्स पर आधारित होंगे। दूसरे चरण में 5 टेस्ट विषय-वार संचालित किए जाएंगे। अंतिम चरण में 3 फुल-लेंथ टेस्ट लिए जाएंगे, ताकि अभ्यर्थियों को वास्तविक परीक्षा जैसे माहौल में अभ्यास का अवसर मिल सके। संस्थान की प्राचार्या सुश्री दुर्गेश्वरी सिंह ने बताया कि सभी टेस्ट प्रत्येक बुधवार और शनिवार को दोपहर 2 बजे से 4 बजे तक आयोजित किए जाएंगे। प्रत्येक टेस्ट में 100 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे, जिन्हें वर्तमान परीक्षा-पैटर्न के अनुरूप विशेषज्ञों द्वारा तैयार किया गया है। टेस्ट-सीरीज़ पूरी तरह ऑफलाइन आयोजित की जा रही है।

प्रधानमंत्री अनुसूचित जाति अभ्युदय योजना : अनुसूचित जाति वर्ग के हितग्राही अपना व्यवसाय स्थापित करने हेतु ले सकेगें ऋण

-संवाददाता-

जशपुरनगर,25 दिसम्बर 2025 (घटती-घटना)।

प्रधानमंत्री अनुसूचित जाति अभ्युदय योजनान्तर्गत व्यवसाय स्थापित करने हेतु अनुसूचित जाति वर्ग के पात्र हितग्राहियों को ऋण लेने पर 50 प्रतिशत या अधिकतम 50 हजार रुपए तक जो भी कम हो अनुदान राशि प्रदान किया जाएगा। जिला अंत्यावसायी सहकारी विकास विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार वर्ष 2025-26 हेतु अनुसूचित जाति वर्ग के पात्र हितग्राहियों जो कि अपना व्यवसाय स्थापित करने हेतु ऋण लेने के इच्छुक हैं, जिनकी आयु 18 से 50 वर्ष हो एवं वार्षिक आय 02 लाख 50 हजार हो ऐसे इच्छुक व्यक्ति को बैंक के माध्यम से न्यूनतम ऋण राशि 01 लाख रुपये पर रुपये 50 हजार या ऋण राशि का 50 प्रतिशत जो भी कम हो अनुदान स्वरूप प्रदाय किया जावेगा।

योजना अंतर्गत संचालित संभावित व्यवसाय' : लघु उद्योग एवं व्यापार के लिए बैंकों के माध्यम से ऋण स्वीकृत कराये जाने हेतु प्रकरण भेजे जाते हैं। निगम द्वारा अनुदान प्रेषित किया जाता है। ऋण इकाई लागत की अधिकतम सीमा नहीं है। विभिन्न प्रकार की आयजनित योजनाएं यथा-किराना, मनिहारी, कपड़ा, नाई सेलून, ब्यूटी पार्लर, टेलरिंग, फैसी, मनिहारी,मोटर मैकेनिक, सायकिल मरम्मत एवं दुकान, टी व्ही रेडियो मोबाईल रिपेयरिंग, वाइंडिंग, मुर्गीपालन, बकरी पालन, सब्जी व्यवसाय, दोनापत्तल निर्माण, लघु एवं कुटीर उद्योग एवं स्थानीय परिस्थिति अनुसार अन्य आवश्यकताजनति व्यवसाय हो सकते हैं।

पात्रता : योजना का लाभ लेने के लिए आवेदक को संबंधित जिले का मूल निवासी होना होगा। इस हेतु सक्षम अधिकारी द्वारा जारी मूल निवासी प्रमाण पत्र के साथ मतदाता पहचान पत्र, राशन कार्ड, आधार कार्ड, बैंक पासबुक या बिजली बिल तथा आवेदक को संबंधित जाति वर्ग के लिए सक्षम अधिकारी द्वारा जारी जाति प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना होगा। प्रधानमंत्री अनुसूचित जाति अभ्युदय योजना के दिशा निर्देश अनुसार परिवार की वार्षिक आय सीमा राशि रू. 2 लाख 50 हजार तक होने से पात्रता होगी।

16.44 लीटर अंग्रेजी शराब के साथ आरोपी गिरफ्तार

-संवाददाता-

अम्बिकापुर,25 दिसम्बर 2025 (घटती-घटना)।

बलरामपुर जिले के डिंडो क्षेत्र में संभागीय आबकारी उडनदस्ता टीम ने 16.44 लीटर अंग्रेजी शराब के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी अपने घर में यूपी का शराब रखकर विक्री करने का काम कर रहा था। टीम ने आरोपी के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है। जानकारी के अनुसार संभागीय आबकारी उडनदस्ता टीम 25 दिसंबर को बलरामपुर जिले के डिंडो क्षेत्र में गश्त कर रही थी। इस दौरान मुखबिर से सूचना मिली त्रिकुंडा थाना क्षेत्र के वराह नगर निवासी देवनारायण जायसवाल अपने घर में भारी मात्रा में शराब रखेर विक्री करने का काम कर रहा है। सूचना पर टीम मौके पर पहुंचकर घर की तलाशी ली। घर से यूपी का 16.44 लीटर शराब पाया गया। जिसे संभागीय आबकारी टीम ने जब्त कर आरोपी देवनारायण जायसवाल को गिरफ्तार किया है। टीम ने आरोपी के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है।

CMYK

मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने अटल चौक में किया माल्यार्पण कलेक्ट्रेट व नगरीय-ग्रामीण निकायों में कार्यक्रमों की श्रृंखला

अटल बिहारी वाजपेयी जयंती पर सूरजपुर में सुशासन दिवस श्रद्धा और संकल्प के साथ मनाया गया

- अटल जयंती पर जिले भर में सुशासन का संदेश,मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने अर्पित की श्रद्धांजलि
- अटल बिहारी वाजपेयी जयंती पर प्रशासन और जनप्रतिनिधियों ने लिया सुशासन का संकल्प
- अटल जी के आदर्शों पर चलकर संवेदनशील सुशासन का संकल्प
- सुशासन दिवस पर अटल विचारों को आत्मसात करने का संकल्प
- अटल जयंती पर कलेक्ट्रेट से ग्राम पंचायत तक कार्यक्रमों की श्रृंखला

-संवाददाता-
सूरजपुर,25 दिसंबर 2025
(घटती-घटना)।

भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती एवं सुशासन दिवस के अवसर पर सूरजपुर जिले में विविध कार्यक्रमों का आयोजन श्रद्धा, सम्मान और संकल्प के साथ किया गया। जिले के नगरीय निकायों, ग्राम पंचायतों और कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित कार्यक्रमों में अटल जी के विचारों, सुशासन की अवधारणा और जनसेवा के मूल्यों को स्मरण किया गया। अटल चौक बीरपुर में मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने अर्पित की श्रद्धांजलि- महिला एवं बाल विकास तथा समाज कल्याण मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने अपने निज निवास ग्राम बीरपुर स्थित अटल चौक में अटल बिहारी वाजपेयी के छायाचित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे। मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने भटगांव नगर पंचायत में अटल परिसर के लोकार्पण कार्यक्रम में भी सहभागिता की, मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने अपने संबोधन में कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति में सुशासन, राष्ट्रहित और संवेदनशील नेतृत्व के प्रतीक थे। उन्होंने सिद्ध किया कि राजनीति सत्ता का साधन नहीं, बल्कि जनसेवा और राष्ट्रनिर्माण का माध्यम है। सुशासन दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि शासन तभी सार्थक है जब वह पारदर्शी, जवाबदेह और आमजन के कल्याण के लिए समर्पित हो, उन्होंने कहा कि राज्य सरकार विष्णुदेव साय के नेतृत्व में अटल जी की विचारधारा पर चलते हुए पारदर्शी, संवेदनशील और जनहितकारी सुशासन को और अधिक सशक्त बना रही है। महिला, बच्चों, दिव्यांगजनों, वरिष्ठ नागरिकों एवं समाज के कमजोर वर्गों के कल्याण के लिए संचालित योजनाएं अटल जी के विचारों को धरातल पर उतारने का प्रयास हैं।

कलेक्ट्रेट में सुशासन दिवस, अधिकारियों ने ली सत्यनिष्ठा की शपथ- सुशासन दिवस के अवसर पर कलेक्ट्रेट परिसर में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कलेक्टर एस. जयवर्धन ने अटल बिहारी वाजपेयी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पारदर्शिता, जवाबदेही और जनसेवा की शपथ दिलाई, कलेक्टर जयवर्धन ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी का संपूर्ण जीवन प्रशासन और राजनीति दोनों के लिए प्रेरणास्त्रोत है, उनके विचार आज भी शासन व्यवस्था को ईमानदारी, संवेदनशीलता और जनकल्याण के मार्ग पर चलने की सीख देते हैं। कार्यक्रम में संयुक्त कलेक्टर, डिप्टी कलेक्टर सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

नगरीय निकायों और ग्राम पंचायतों में भी हुआ आयोजन- जिले के विभिन्न नगरीय निकायों एवं ग्राम पंचायतों में भी अटल जयंती एवं सुशासन दिवस श्रद्धा के साथ मनाया गया, जनपद पंचायत प्रतापपुर अंतर्गत ग्राम पंचायत जमदेई सहित अन्य पंचायतों में कार्यक्रम आयोजित कर अटल जी के जीवन, आदर्शों और सुशासन की अवधारणा पर प्रकाश डाला गया, नगर पंचायत प्रेमनगर में अटल जयंती के अवसर पर अटल परिसर लोकार्पण कार्यक्रम आयोजित हुआ। वहीं ग्राम पंचायत अवंतिकापुर तथा नगर पंचायत प्रतापपुर में भी जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों और नागरिकों की सहभागिता के साथ सुशासन दिवस कार्यक्रम संपन्न हुए। प्रेमनगर क्षेत्र के ग्राम पंचायत महुली में भी अटल बिहारी वाजपेयी के योगदान को स्मरण किया गया, सभी कार्यक्रमों में वक्ताओं ने एक स्वर में कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी का जीवन सुशासन, पारदर्शिता, लोकतांत्रिक मूल्यों और जनसेवा की मिसाल है, उनके विचारों को आत्मसात कर शासन की योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाना ही सुशासन दिवस का वास्तविक उद्देश्य है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने किया राज्यव्यापी वर्चुअल लोकार्पण

अटल जयंती पर छत्तीसगढ़ के 115 शहरों को मिली अटल परिसरों की सौगात

-संवाददाता-
एमसीबी,25 दिसंबर 2025
(घटती-घटना)।

पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी की 101वीं जयंती के अवसर पर छत्तीसगढ़ में एक ऐतिहासिक आयोजन हुआ। राज्य के 115 नगरीय निकायों में नवनिर्मित अटल परिसरों का एक साथ लोकार्पण किया गया। राजधानी रायपुर में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम से मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी अटल परिसरों का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर सहित प्रदेश के सभी नगरीय निकाय वर्चुअली जुड़े रहे।

मनेंद्रगढ़ में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पूर्व संसदीय सचिव एवं जिला अध्यक्ष श्रीमती चम्पा देवी पावले ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी की दूरदर्शी सोच ने भारत को विकास, सुशासन और आत्मनिर्भरता की दिशा दी। उन्होंने कहा कि अटल जी का सपना था कि गांव और शहर के बीच की दूरी समाप्त हो और विकास अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे, जो आज साकार होता दिख रहा है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, छत्तीसगढ़ राज्य का गठन और मजबूत राष्ट्र निर्माण अटल जी की ऐतिहासिक देन है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के संकल्प का उल्लेख करते हुए कहा कि अटल जी की प्रेरणा से देश निरंतर प्रगति कर रहा है। पूर्व जिला अध्यक्ष अनिल केसरवानी ने अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन और विचारों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे सत्ता के लिए नहीं, बल्कि सत्ता को दिशा देने वाले नेता थे। संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में भाषण देकर राष्ट्रभाषा को वैश्विक मंच दिलाना, आपातकाल में लोकतंत्र की रक्षा और अंत्योदय को राजनीति का आधार बनाना उनके अविस्मरणीय योगदान हैं। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए नीरज अग्रवाल ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी ने सुशासन को जनता से सीधे जुड़ाव का माध्यम बनाया। नगरपालिका जैसे संस्थानों के माध्यम से आमजन तक शासन का लाभ पहुंचाना अटल जी की सोच का सशक्त उदाहरण है। इस अवसर पर नगर पालिका परिषद मनेंद्रगढ़ की अध्यक्ष श्रीमती प्रतिमा यादव, परिषद सदस्यगण एवं बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के माध्यम से अटल बिहारी वाजपेयी के विचारों, उनके विकास दृष्टिकोण और राष्ट्रनिर्माण के संकल्प को जन-जन तक पहुंचाने का संदेश दिया गया तथा उनके जन्मदिवस पर उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती विरांगना श्रीवास्तव ने किया।

अटल सुशासन दिवस पर अम्बिकापुर में अटल परिसर का लोकार्पण,अटल जी के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,25 दिसंबर 2025
(घटती-घटना)।

अटल सुशासन दिवस के अवसर पर आज स्वच्छता चेतना उद्यान,अम्बिकापुर में भाजपा सरगुजा द्वारा भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेयी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। इसी अवसर पर स्व. अटल बिहारी बाजपेयी की प्रतिमा का अनावरण करते हुए अटल परिसर का विधिवत लोकार्पण संपन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि आज समूचे छत्तीसगढ़ में नव-निर्मित 115 अटल परिसरों का लोकार्पण मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय द्वारा वर्चुअल माध्यम से किया गया, जिसके अंतर्गत अम्बिकापुर का अटल परिसर भी शामिल रहा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री राजेश अग्रवाल ने कहा कि अटल बिहारी बाजपेयी का जीवन सुशासन, राष्ट्रसेवा और सांस्कृतिक चेतना का जीवंत उदाहरण है। अटल परिसरों के माध्यम से उनके विचार आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचेंगे। सांसद चिंतामणि महाराज ने अटल जी को समर्पित राजनीति का प्रतीक बताते हुए कहा कि उनके आदर्श आज भी देश के लिए मार्गदर्शक हैं। भाजपा प्रदेश महामंत्री अखिलेश सोनी ने अटल सुशासन की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भाजपा सरकार सुशासन, पारदर्शिता और गरीब कल्याण के संकल्प के साथ कार्य कर रही है। जिलाध्यक्ष भारत सिंह सिसोदिया ने संगठनात्मक भूमिका पर जोर देते हुए कहा कि अटल जी के विचारों को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाना ही सच्ची श्रद्धांजलि है। महापौर मंजूषा भगत ने नगर विकास में अटल जी की सोच को स्मरण करते हुए शहर के सर्वांगीण विकास के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त की। कार्यक्रम के दौरान कवियों द्वारा स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेयी की स्मृति में स्वरचित कविताओं का पाठ किया गया। हास्य एवं व्यंग्य से परिपूर्ण प्रस्तुतियों ने वातावरण को प्रेरणादायी बना दिया। साथ ही भाजपा सरगुजा झुग्गीझोपड़ी प्रकोष्ठ द्वारा गरीब व जरूरतमंदों को ठंड से राहत देने हेतु कम्बल वितरित किए गए।

पटना नगर पंचायत में अटल परिसर का लोकार्पण...मुख्यमंत्री वर्चुअल रूप से जुड़े

अटल जयंती पर पटना को मिला अटल परिसर,भव्य प्रतिमा का अनावरण

छत्तीसगढ़ राज्य निर्माता अटल बिहारी वाजपेयी को पटना नगर पंचायत की श्रद्धांजलि

छत्तीसगढ़ राज्य निर्माता भारत रत्न स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी की भव्य प्रतिमा का अनावरण

-संवाददाता-
पटना/कोरिया,25 दिसम्बर 2025 (घटती-घटना)।

अटल परिसर और प्रतिमा का यह लोकार्पण न केवल स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी के प्रति श्रद्धांजलि है, बल्कि छत्तीसगढ़ की पहचान, अस्मिता और विकास यात्रा का स्मरण भी जो आने वाली पीढ़ियों को राष्ट्रप्रेम और जनसेवा के मार्ग पर प्रेरित करे, कोरिया जिले की नगर पंचायत पटना में छत्तीसगढ़ राज्य निर्माता, भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की 101वीं जन्म जयंती के अवसर पर अटल परिसर का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी की भव्य प्रतिमा का विधिवत अनावरण भी किया गया। कार्यक्रम में प्रदेश के मुख्यमंत्री वर्चुअल माध्यम से शामिल हुए। 25 दिसंबर को अटल जी की जयंती के अवसर पर प्रदेशभर के 115 नगरीय निकायों में अटल परिसर और प्रतिमाओं का वर्चुअल लोकार्पण मुख्यमंत्री द्वारा किया गया। इसी क्रम में नगर पंचायत पटना में आयोजित कार्यक्रम में नगर पंचायत अध्यक्ष गायत्री सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं, जबकि उपाध्यक्ष गौरव अग्रवाल विशिष्ट अतिथि रहे। मुख्यमंत्री द्वारा वर्चुअल लोकार्पण के पश्चात नगर पंचायत अध्यक्ष गायत्री सिंह ने अटल परिसर एवं स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी की प्रतिमा का विधिवत लोकार्पण किया। जन्म जयंती के अवसर पर प्रतिमा पर महामाला अर्पित कर तथा दीप प्रज्ज्वलन कर श्रद्धांजलि दी गई।

'यह छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण की सौगात देने वाले अटल जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि '— गायत्री सिंह- नगर पंचायत अध्यक्ष गायत्री सिंह ने कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण का सपना साकार करने वाले स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का यह अवसर नगरवासियों के लिए गर्व का क्षण है। उन्होंने कहा कि अलग राज्य का दर्जा देकर अटल जी ने छत्तीसगढ़ को विकास के पथ पर आगे बढ़ाया और बेहतर प्रशासन की नींव रखी।

अटल जी की दूरदर्शिता से ही छत्तीसगढ़ को मिला अलग राज्य का दर्जा:कपिल जायसवाल

भाजपा कोरिया जिला महामंत्री कपिल जायसवाल ने कहा कि स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी की दूरदर्शी सोच का ही परिणाम है कि छत्तीसगढ़ को अलग राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि आज प्रदेश विकास के पथ पर अग्रसर है और सुशासन सरकार अटल जी के दिखाए मार्ग पर चलते हुए जनकल्याण के लिए कार्य कर रही है। प्रशासन गांव-गांव जाकर समस्याओं का निराकरण कर रहा है।

आने वाली पीढ़ियों को अटल जी के योगदान से जोड़ेगा अटल परिसर-तीरथ राजवाड़े

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी तीरथ राजवाड़े ने कहा कि स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी का देश और प्रदेश हित में दिया गया योगदान आने वाली पीढ़ियां न भूलें–इसी उद्देश्य से अटल परिसर की स्थापना की गई है। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ को अलग राज्य का दर्जा देकर अटल जी ने प्रदेशवासियों की वर्षों पुरानी अपेक्षाओं को पूरा किया।

कार्यक्रम में ये रहे उपस्थित

उद्घाटन एवं लोकार्पण कार्यक्रम में नगर पंचायत अध्यक्ष गायत्री सिंह, उपाध्यक्ष गौरव अग्रवाल, अपर कलेक्टर, तहसीलदार पटना, सीएमओ नगर पंचायत पटना, पार्षद रेखा वर्मा, अहिबरन सिंह, अमित कुमार सिंह, प्रमिला सिंह, ज्योति सिंह, राजेश सोनी, निर्मला पोया, सहकारिता विभाग सरगुजा उपाध्यक्ष जगदीश साहू, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी तीरथ राजवाड़े, मंडल अध्यक्ष पटना रामलखन यादव, चेंबर ऑफ कॉमर्स अध्यक्ष शारदा गुप्ता, पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा जवाहरलाल गुप्ता, पूर्व जिला उपाध्यक्ष रविशंकर शर्मा, पूर्व मंडल महामंत्री पटना रितेश सिंह, सुमनकांत तिवारी, भाजपा अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष दिलराज रवि, राजेंद्र पाण्डेय सहित बड़ी संख्या में नगरवासी उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री सड़क स्वीकृति पर श्रेय की राजनीति पूर्व विधायक गुलाब कमरों ने रखे तथ्य

-संवाददाता-
मनेन्द्रगढ़,25 दिसम्बर 2025 (घटती-घटना)।

सड़कों की जरूरत और विकास निर्विवाद है, लेकिन श्रेय की राजनीति के बीच दस्तावेजों के साथ उठाए गए सवाल यह संकेत देते हैं कि राजनीतिक दावों से अधिक महत्वपूर्ण तथ्य और पारदर्शिता है, जिस पर अब जनता अपनी राय बनाएगी, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत भरतपुर-सोनहत विधानसभा क्षेत्र में करोड़ों रुपये की लागत से स्वीकृत सड़कों को लेकर राजनीतिक बयानबाजी तेज हो गई है। क्षेत्र की वर्तमान विधायक द्वारा सोशल मीडिया में इन सड़कों की प्रशासकीय स्वीकृति को अपनी उपलब्धि बताने के बाद अब पूर्व विधायक गुलाब कमरों ने प्रेस वार्ता कर तथ्यों के साथ अपना पक्ष सामने रखा है, प्रेस वार्ता में पूर्व नपा अध्यक्ष राजकुमार केसरवानी, युवा कांग्रेस जिला अध्यक्ष हाफिज मेमन,पार्षद स्वप्निल सिंहा सहित कांग्रेस के अन्य पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पूर्व विधायक गुलाब कमरों ने स्पष्ट कहा कि इन सड़कों का प्रस्ताव,अनुशंसा और

प्रारंभिक प्रक्रिया पूर्व कांग्रेस सरकार के दौरान पूरी हुई थी। उन्होंने बताया कि कोरबा लोकसभा क्षेत्र की सांसद ज्योत्सना चरणदास महंत की अनुशंसा और निरंतर प्रयासों के कारण ये सड़क परियोजनाएं प्रस्तावित होकर स्वीकृत हुईं। कमरों ने कहा कि विकास कार्यों का श्रेय लेने के बजाय जनता के सामने सच्चाई रखना जरूरी है, उन्होंने आंकड़ों के साथ जानकारी दी कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना स्टेज 4 के तहत कोरिया जिले में सांसद की अनुशंसा से 52 सड़कों का प्रस्ताव भेजा गया, जिनमें से 27 सड़कों को लगभग 147 करोड़ रुपये की स्वीकृति मिली, मनेन्द्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर) जिले में 70 सड़कों के प्रस्ताव में से 56 सड़कों को करीब 236 करोड़ रुपये की मंजूरी प्राप्त हुई, इसके अतिरिक्त पीएम जनमन योजना के अंतर्गत एमसीबी जिले में 55 सड़कों को लगभग 179 करोड़ रुपये की स्वीकृति सांसद की पहल से मिली। परियोजनाओं की फाइल प्रक्रिया पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के समय- गुलाब कमरों ने कहा कि इन सभी परियोजनाओं की फाइल प्रक्रिया पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के समय शुरू हुई थी, और सांसद की सक्रिय भूमिका रही है, उन्होंने उन प्रस्तावों की प्रतियां भी साझा कीं जिन पर सांसद सहित संबंधित शासकीय अधिकारियों के हस्ताक्षर मौजूद हैं, कमरों का आरोप है कि अब जब प्रशासकीय प्रक्रिया पूरी हो चुकी है, तब वर्तमान विधायक श्रेय लेने का प्रयास कर रही हैं, जो वास्तविकता से परे है, पूर्व विधायक ने तीखे शब्दों में कहा, 'जनता सब देख रही है, झूठी वाहवाही लेकर जनता को गुमराह करने की राजनीति बंद होनी चाहिए, साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि वे विकास कार्यों के विरोध में नहीं हैं, बल्कि वास्तविक योगदान और सत्य को सामने रखने के पक्षधर हैं, ताकि किसी तरह का भ्रम न फैले।

पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी की याद में अनेक कार्यक्रम हुए आयोजित

-संवाददाता-
कोरबा,25 दिसंबर 2025 (घटती-घटना)।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेई का 101वां जन्मदिवस पुरे भारत वर्ष सहित कोरबा में भी मनाया गया। देश के अन्य हिस्सों की तरह ही कोरबा में भी स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा राष्ट्रहित में किए गए कार्य को स्मरण करते हुए उनके गुणों का बखान किया गया। कोरबा अंचल के अप्पू गार्डन और अटल परिसर के समक्ष आयोजित सुशासन दिवस समापन समारोह में छत्तीसगढ़ के कैबिनेट मंत्री लखन लाल देवांगन, महापौर संजू देवी राजपूत, भाजपा जिला अध्यक्ष गोपाल मोदी सहित अन्य की उपस्थिति में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेई का 101वां जन्मदिवस मनाया गया। स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें स्मरण किया गया।

इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री लखन लाल देवांगन, महापौर संजू देवी राजपूत, जिला अध्यक्ष गोपाल मोदी, नगर निगम आयुक्त आशुतोष पांडे सहित अन्य वक्ताओं ने स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेई द्वारा की गई राष्ट्र सेवा को स्मरण करते हुए उन्हें श्रधांजलि अर्पित की। सुशासन दिवस समापन समारोह में नगर निगम सभापति नूतन सिंह ठाकुर, वरिष्ठ पार्षद अशोक चावलानी, लक्ष्मण श्रीवास सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि नगर निगम के अधिकारी/कर्मचारी और गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

जशपुर जिले के पांच नगरीय निकायों में अटल परिसर का हुआ लोकार्पण

अतिथियों ने भारत रत्न स्वर्गीय पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के योगदान को याद कर उन्हें किया नमन

-संवाददाता-
जशपुरनगर,25 दिसम्बर 2025 (घटती-घटना)।

भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेई की जयंती पर आज रायपुर में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने प्रदेशभर में अटल शताब्दी वर्ष के अंतर्गत नवनिर्मित 115 अटल परिसरों का वर्चुअली लोकार्पण किया। इनमें जिले में जशपुर जिला मुख्यालय के संग्रहालय परिसर में निर्मित अटल परिसर सहित पत्थलगांव, कुनकुरी, कोतबा और बगीचा में निर्मित अटल परिसर शामिल है। जशपुर के जिला संग्रहालय में आयोजित कार्यक्रम में विधायक श्रीमती रायमुनी भगत ने प्रतिकात्मक तौर पर अटल परिसर का लोकार्पण किया और श्री अटल बिहारी वाजपेयी के आदमकद मूर्ति का अनावरण किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने अपने संबोधन में कहा कि भारत रत्न स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी का व्यक्तित्व अत्यंत प्रेरणादायी था। वे केवल एक कुशल राजनेता ही नहीं बल्कि अजातशत्रु, कवि, पत्रकार, समाजसेवी, लेखक, चिंतक, विचारक और अत्यंत संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी थे। उनका संपूर्ण जीवन राष्ट्र सेवा को समर्पित रहा। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना और प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना जैसी ऐतिहासिक योजनाओं की निर्माण कर अटल जी ने शहरों से लेकर गांवों तक सड़कों के मजबूत नेटवर्क

की नींव रखी जिससे विकास कार्यों को अभूतपूर्व गति मिली। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण अटल बिहारी वाजपेयी जी की दूरदर्शी सोच का परिणाम है और उनसे प्रेरणा पाकर छत्तीसगढ़ निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि अटल जी ने सुशासन को शासन प्रणाली का मूलमंत्र बताया और उसी अनुरूप देश की प्रशासनिक व्यवस्था को दिशा दी। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी के सपनों के अनुरूप छत्तीसगढ़ का निर्माण करने के लिए हमारी सरकार पूर्णतः प्रतिबद्ध है और विजन डॉक्यूमेंट के अनुसार कार्य करते हुए वर्ष 2047 तक विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण हेतु दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ रही है। इस अवसर पर विधायक श्रीमती रायमुनी भगत ने भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेई के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को स्मरण करते हुए कहा कि आज का दिन हम सभी के लिए गर्व और प्रसन्नता का है। यह दिन श्री अटल बिहारी वाजपेई के राष्ट्र के प्रति समर्पण, दूरदर्शी नेतृत्व और छत्तीसगढ़ के विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को याद करने का अवसर है। उन्होंने कहा कि अटल बिहारी वाजपेई जी की दूरदर्शी सोच का ही परिणाम है कि छत्तीसगढ़ का गठन हुआ और आज यह राज्य विकास की राह पर निरंतर आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना जैसी महत्वाकांक्षी योजना के माध्यम से उन्होंने गांवों को मुख्य मार्गों से जोड़ा, जिससे दूरस्थ अंचलों में भी विकास की रफ्तार तेज हुई। इस अवसर पर श्रीमती भगत ने छत्तीसगढ़ निर्माण में स्वर्गीय कुमार दिलीप सिंह जूदेव के योगदान को भी श्रद्धापूर्वक स्मरण किया। नगर पालिका अध्यक्ष श्री अरविंद भगत ने अपने संबोधन में कहा कि अटल बिहारी वाजपेई केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक विचारधारा थे। वे हम सभी के पथप्रदर्शक हैं। उनके

बताए मार्ग पर चलते हुए आज हम जनसेवा और विकास के कार्यों को निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि अटल बिहारी वाजपेई छत्तीसगढ़ राज्य के सच्चे निर्माता थे और अटल परिसर का लोकार्पण हम सभी के लिए सौभाग्य की बात है। इस अवसर पर उन्होंने भी स्वर्गीय कुमार दिलीप सिंह जूदेव को नमन किया। नगर पालिका उपाध्यक्ष श्री यश प्रताप सिंह जूदेव ने स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेई जी की प्रसिद्ध कविता टूटे हुए सपनों की कौन सुने सिसकी, अंतर की चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी, हार नहीं मानूँगा, रार नई ठानूँगा, काल के कपाल पर लिखता-मिटाता हूँ, गीत नया गाता हूँ का पाठ कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की और राष्ट्र के प्रति उनके अतुलनीय योगदान को स्मरण किया। इस अवसर पर जनपद पंचायत अध्यक्ष श्री गंगाराम भगत, पूर्व विधायक श्री जागेश्वर भगत, कृष्ण कुमार राय, पार्षदगण श्री राजेश गुप्ता, श्री देवधन नायक, श्रीमती कंचन बैरागी, श्रीमती विजेता भगत, श्री शशि भगत, श्री विनोद निकुंज, सुश्री कमला बाई, श्रीमती शैलेंद्री यादव, श्री सुधीर पाठक और श्री द्वारिका मिश्रा, कलेक्टर श्री रोहित व्यास, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री शशिमोहन सिंह, नगर पालिका जशपुर के सीएमओ श्री योगेश्वर उपाध्याय, सहायक अभियंता श्री कैलाश खरोले, श्रीमती शारदा प्रधान, श्रीमती रजनी प्रधान, श्री कृपाशंकर भगत सहित जनप्रतिनिधिगण, अधिकारी-कर्मचारी और बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

रंगीन रोशनी, फव्वारा और अटल की प्रेरक कविताओं से सजा अटल परिसर बनेगा प्रेरणा का केंद्र : जिला संग्रहालय परिसर में लगभग 30 लाख रुपये की लागत से निर्मित अटल परिसर को अत्यंत आकर्षक एवं भव्य रूप से सजाया गया है। परिसर में आधुनिक एवं रंगीन लाइटिंग की व्यवस्था की गई है।

शोक समाचार

सूरजपुर,25 दिसंबर 2025 (घटती-घटना)। नगर के भैयाथान रोड निवासी प्रदीप ठाकुर का 65 वर्ष की आयु में दुःखद निधन हो गया। वे संदीप ठाकुर के पिताश्री तथा राजेंद्र प्रसाद ठाकुर (सेवानिवृत्त शिक्षक) के छोटे भाई थे, उनका अंतिम संस्कार रेणुका नदी तट स्थित मुक्तिधाम में किया गया, जिसमें परिवारजन,रिश्तेदारों एवं नगर के गणमान्य नागरिकों सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे, ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और शोकाकुल परिवार को इस कठिन समय में संबल दे।

कार्यालय अधीक्षण अभियंता

लोक निर्माण विभाग (भ/स) अम्बिकापुर मण्डल अम्बिकापुर

निविदा आमंत्रण तिथि - 20.12.2025

ई-प्रोक्योरमेंट निविदा सूचना

01. निविदा की विस्तृत जानकारी के लिये Log in करें http://eproc.cgstate.gov.in
02. संबंधित संभाग- मनेन्द्रगढ़ संभाग
03. स.क्र. 1'स' वर्ग एवं ऊपर ठेकेदार
04. ऑनलाईन निविदा डालने की अंतिम तिथि स.क्र. 1 - 12.01.2026

स0 क्र0	एन.आई.टी. क्रमांक	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में)
1	2	3	4
1	225	व्यवहार न्यायालय जनकपुर के तृतीय श्रेणी कर्मचारियों हेतु 02 नग (जी) टाईप एवं 07 नग 'एच' टाईप शासकीय आवास गृह निर्माण कार्य विद्युतीकरण सहित । (प्रथम आमंत्रण)	129.70

अधीक्षण अभियंता
लोक निर्माण विभाग
बिकापुर मण्डल अम्बिकापुरी

जी नंबर-252605647/2

नाली का पानी सड़कों पर,विकास के दावे पोस्टरों तक सीमित

भैयाथान रोड बना जलनिकासी का नर्क,नगर पालिका मौन

- सड़कें पूंजीपतियों के लिए,जनता के लिए गड्ढे?
- टेंडर उन्हीं जमीनों पर,जहां नेताओं की प्लॉटिंग!
- शहर डूब रहा है...जनप्रतिनिधि निरीक्षण में व्यस्त
- सूरजपुर में विकास नहीं,विकास का भ्रम फैलाया जा रहा

-ओंकार पाण्डेय-

सूरजपुर,25 दिसंबर 2025 (घटती-घटना)।

शहर की सड़कों पर बहता नाली का पानी अब सिर्फ एक नागरिक समस्या नहीं रहा, बल्कि नगर पालिका, जनप्रतिनिधियों और विकास नीति पर सीधा सवाल बन चुका है, भैयाथान रोड से लेकर मनेन्द्रगढ़ मार्ग तक हालात ऐसे हैं कि सड़कें कम और गंदी नालियां ज़्यादा नजर आती हैं। सोशल मीडिया पर सामने आए नागरिकों के पोस्टों ने उस हकीकत को उजागर कर दिया है, जिसे लंबे समय से दबाने की कोशिश हो रही थी, स्थानीय नागरिकों का आरोप है कि जानबूझकर नई नालियों का निर्माण नहीं किया जा रहा, ताकि नाली का पानी दूसरों की जमीन में फैलता रहे और लोग मजबूर होकर अपनी जमीन बेच दें, सबसे गंभीर आरोप यह है कि वार्ड पार्षद और जिम्मेदार जनप्रतिनिधि आंखें मूंदे बैठे हैं, क्योंकि इन्हीं प्रभावशाली लोगों के सहारे चुनावी गणित साधा जाता है, एक वायरल पोस्ट में यह भी आरोप लगाया गया है कि नगर पालिका उन्हीं इलाकों में सड़क निर्माण के टेंडर निकाल रही है, जहां नेताओं या रसूखदारों की प्लॉटिंग है, जबकि शहर की मुख्य सड़कों पर गड्ढे, जलभराव और बदहाली जस की तस बनी हुई है, नाली का पानी सड़क पर बह रहा है, लेकिन मरम्मत शून्य है, वहीं दूसरी ओर अधिकारियों को सम्मानित किया जा रहा है और जनप्रतिनिधि शहर की समस्याओं से ज़्यादा फोटो-ऑप और निरीक्षण राजनीति में व्यस्त बताए जा रहे हैं।

स्थानीय नागरिक सवाल पूछ रहे हैं: जब शहर की मुख्य सड़कों की यह हालत है, जब नाली का पानी लोगों के घरों और दुकानों तक पहुंच रहा है, तब नया विकास आखिर किसके लिए हो रहा है? अब तक इन गंभीर आरोपों पर नगर पालिका या संबंधित जनप्रतिनिधियों की कोई आधिकारिक सफाई सामने नहीं आई है, लेकिन सोशल मीडिया पर उबाल साफ बताता है कि जनता अब चुप नहीं है, सूरजपुर में असली संकट सड़क या नाली का नहीं, नियत का है, अगर विकास का रास्ता कुछ खास जमीनों और कुछ खास चेहरों से होकर ही गुजरेगा, तो शहर यूं ही नालियों में डूबता रहेगा, जनता अब सवाल पूछ रही है और यही किसी भी लोकतंत्र की सबसे बड़ी चेतावनी होती है।

'रन फॉर फन' अंतर्गत एनसीसी कैडेटों ने लगाई दौड़...दिया स्वास्थ्य एवं नशा मुक्ति का संदेश

-संवाददाता-

कोरबा,25 दिसंबर 2025 (घटती-घटना)।

सीजी एनसीसी बटालियन कोरबा द्वारा सरस्वती शिशु मंदिर,कोरबा में आयोजित वार्षिक प्रशिक्षण शिविर के सातवें दिन 'रन फॉर फन' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शिविर का समापन 28 दिसंबर को होगा। शिविर का संचालन कैंप कमांडेंट कर्नल सेंथिल कुमार एस. के नेतृत्व में किया जा रहा है। शिविर में प्रतिदिन कैडेटों को सैन्य प्रशिक्षण के अंतर्गत शस्त्र प्रशिक्षण, फायरिंग, नेविगेशन, टेंट पिचिंग, कवायद (ड्रिल), मैप रीडिंग सहित विभिन्न विषयों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। साथ ही कैडेटों को प्रतिदिन मोटिवेशनल एवं सुरक्षात्मक व्याख्यानों के माध्यम से सामाजिक दायित्वों के प्रति जागरूक किया जा रहा है। इसी क्रम में आयोजित 'रन फॉर फन' कार्यक्रम की थीम 'ड्रग एब्यूज एंड ओबेसिटी' रखी गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कोरबा नगर निगम आयुक्त आशुतोष पांडेय उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है तथा नशे से दूर रहकर ही बेहतर और सफल जीवन जिया जा सकता है। उन्होंने एनसीसी कैडेटों द्वारा की जा रही सामाजिक सेवा गतिविधियों की सराहना की।कोरबा नगर निगम आयुक्त आशुतोष पांडेय, कर्नल सेंथिल कुमार एस. एवं कर्नल अमित यादव ने कैडेटों को हरी झंडी दिखाकर दौड़ के लिए रवाना किया। इसके पश्चात कैंप कमांडेंट कर्नल सेंथिल कुमार एस. एवं कर्नल अनिल यादव द्वारा अतिथियों को स्मृतिचिह्न भेंट किए गए। कैडेटों ने कोसाबाड़ी चौक से आत्मानंद कॉलेज तक लगभग दो किलोमीटर की दौड़ लगाकर आम नागरिकों को नशा न करने एवं मोटापे से बचने का संदेश दिया।

इस अवसर पर कैडेटों ने बताया कि नशा शुरुआत में दोस्त बनकर आता है,लेकिन धीरे-धीरे व्यक्ति के भविष्य का सबसे बड़ा दुश्मन बन जाता है। यदि युवा नशे की गिरफ्त में आ जाए तो उसका दुष्प्रभाव पूरे परिवार, समाज और राष्ट्र पर पड़ता है। कैडेटों ने आम जनता से अपील की हैं कि ताकत किसी बोतल में नहीं, बल्कि मजबूत इरादों और स्वस्थ जीवनशैली में होती है। नशे को 'ना' और स्वास्थ्य को 'हाँ' कहकर ही सशक्त भारत का निर्माण संभव है। दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले कैडेटों को मेडल एवं ट्रैक सूट प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन फर्स्ट ऑफिसर दिनेश चतुर्वेदी ने किया। इस अवसर पर कैंप कमांडेंट कर्नल सेंथिल कुमार एस, एडम ऑफिसर कर्नल अमित यादव,सूबेदार मेजर डूंगर सिंह, जेसीओ जनरैल सिंह,महेंद्र शर्मा, रामदेव, मुस्तफा, कैंप एडजुटेंट लेफ्टिनेंट राजेंद्र सिंह, एएनओ संजीव जायसवाल, सुनील तिवारी, ईश्वरी सूर्यवंशी, शिवनारायण, अरुण श्रीवास, मुकलाल, भुवनेश्वर, सावन, शुभम, माया तिवारी, हेमंत सिंह, जीसीआई काजल, पीआई सहित जांजगीर, सरगुजा, कोरिया, पेंड्रा, बिलासपुर एवं कोरबा जिले के लगभग 500 एनसीसी कैडेट्स उपस्थित रहे।

स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी की 101वीं जयंती पर आयोजन

जामपानी में ग्रामीणों को बांटे गए कंबल,दिया गया न्यौता भोज

-संवाददाता-

बैकुंठपुर,25 दिसम्बर 2025 (घटती-घटना)।

कोरिया जिले के बैकुंठपुर अंतर्गत ग्राम जामपानी में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 101वीं जन्म जयंती के अवसर पर ग्रामीणों के लिए कंबल वितरण एवं न्यौता भोज का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम भाजपा झुग्गी-झोपड़ी प्रकोष्ठ के तत्वावधान में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में कोरिया जिला पंचायत अध्यक्ष मोहित राम पैकरा विशेष रूप से शामिल हुए, ग्राम जामपानी पहुंचकर उन्होंने सर्वप्रथम अटल बिहारी वाजपेयी को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा ग्राम के अटल चौक में पुष्प अर्पण कर छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण में उनके योगदान के लिए ग्रामीणों के साथ कृतज्ञता व्यक्त की, इस अवसर पर भाजपा मंडल अध्यक्ष संजय चिकनजूरी, भाजयुमो जिला अध्यक्ष सतेन्द्र राजवाड़े, कार्यक्रम प्रभारी रोशन राजवाड़े, सह-प्रभारी अभिजीत दुबे तथा ग्राम पंचायत जामपानी के सरपंच अमेलाल की उपस्थिति में जिला पंचायत अध्यक्ष द्वारा ग्रामीणों को कंबल एवं शाल का वितरण किया गया। इसके पश्चात ग्रामीणों के साथ न्यौता भोज में सहभागिता की गई।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला पंचायत अध्यक्ष मोहित राम पैकरा ने कहा कि स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी की दूरदर्शिता का ही परिणाम है कि आज छत्तीसगढ़ एक अलग राज्य के रूप में विकास के पथ पर अग्रसर है।

उन्होंने कहा कि प्रदेशवासियों की वर्षों पुरानी मांग को अटल जी ने साकार किया और छत्तीसगढ़ को राज्य का दर्जा देकर विकास की मजबूत नींव रखी। आज राज्य जिस गति से आगे बढ़ रहा है, वह उसी ऐतिहासिक निर्णय की देन है, कार्यक्रम के दौरान जनसंपर्क की आत्मीय झलक भी देखने को मिली। जिला पंचायत अध्यक्ष ग्रामीणों से गले मिलते, बुजुर्गों के पैर छूकर आशीर्वाद लेते नजर आए। ग्रामीणों ने पूरे उत्साह और अपनत्व के साथ कार्यक्रम में भाग लिया।

जनपद पंचायत खड़गवां हमेशा किसी ना किसी मामले को लेकर सुर्खियों में रहता है...

प्रधानमंत्री आवास योजना से खड़गवां मुख्यालय में हो रहे आवास निर्माण कार्य में बडा फर्जीवाड़ा किया जा रहा है

क्या आवास निर्माण कार्य का जियो टैग करने वाला आवास मित्र ग्राम पंचायत सचिव हितग्राही पर कार्यवाही होगी या सांठगांठ से समाप्त होगी?

-राजेन्द्र शर्मा-

खड़गवां,25 दिसंबर 2025 (घटती-घटना)।

जनपद पंचायत खड़गवां तो हमेशा किसी ना किसी मामले को लेकर सुर्खियों में रहता है ऐसे ही कई मामले प्रधानमंत्री आवास योजना का सामने आया है जिसमें जानकारी मिल रही है कि आवास निर्माण कार्य के लिए जो आवास मित्र के द्वारा जियोटेक किया गया है वो ग्राम पंचायत खड़गवां में स्वीकृत हुआ है और प्रधानमंत्री आवास का निर्माण कार्य का निर्माण कार्य रतनपुर ग्राम पंचायत में किया गया और उस प्रधानमंत्री आवास की राशि भी आहरण भी कर ली गई?

अब सवाल खडा हो रहा है कि जब ग्राम पंचायत खड़गवां में प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवास स्वीकृत हुआ है तो ग्राम पंचायत रतनपुर में कैसे बन गया जबकि स्थल पर जियो टैग किया जाता है उसके बाद भी फर्जीवाड़ा कर ग्राम पंचायत रतनपुर में प्रधानमंत्री आवास योजना का निर्माण कार्य कराया दिया गया है? इस प्रधानमंत्री आवास योजना से हुए निर्माण आवास की जानकारी के बाद जनपद पंचायत खड़गवां के मुख्य कार्यपालन अधिकारी के द्वारा नोटिस जारी कर कार्यवाही पूर्ण कर ली गई है आवास मित्र के द्वारा कई ऐसे आवास हितग्राही का जिओ टैग कि है हितग्राही जहां पर आवास का जियो टैग करवाते हैं और घर कहीं और पर बना लेते हैं ऐसा मामला एक ग्राम पंचायत रतनपुर में हुआ है आवास स्वीकृत ग्राम पंचायत खड़गवां में हुआ और निर्माण ग्राम पंचायत रतनपुर में हुआ यह सारी बातें आवास मित्र के द्वारा फर्जीवाड़ा कर किया गया था इस मामले में आवास मित्र एवं बीसी एवं मनरेगा जनपद पंचायत खड़गवां के अधिकारियों के द्वारा इस तरह के आवास निर्माण कार्य पर रोक लगाने की जरूरत नहीं समझी या इन सभी कर्मचारी एवं मनरेगा जनपद पंचायत के अधिकारियों की सांठगांठ से कर दिया गया?

एक मामला खड़गवां मुख्यालय का है पंद्रह साल से दूसरे की पटे की भूमि खसरा नंबर 427/3 पर हसबुन पति राशिद के बेटे का आवास निर्माण दूसरे की भूमि पर किया गया था जहां का जियो टैग भी आवास मित्र के द्वारा किया गया था जब हितग्राही की भूमि नहीं थी तो आवास मित्र ने जियो टैग कैसे कर दिया और प्रधानमंत्री आवास निर्माण कार्य कराया जा रहा था जबकि आवास ही गलत स्थल पर निर्माण कार्य किया जा रहा था तो आवास मित्र ने दूबारा स्थल का जियो टैग कैसे हुआ और दूसरी किस्त की राशि कैसे हितग्राही को प्राप्त हो गई ये जांच कर कार्यवाही योग है?

जबकि इस तरह के आवास निर्माण कार्य की शिकायत जनपद पंचायत खड़गवां के मुख्य कार्यपालन अधिकारी से होने के बाद भी मामले में जांच करने का आश्वासन देकर महज एक नोटिस जारी कर अपना पहला झाड लिया जाता है? इससे ऐसा प्रतीत होता है कि मुख्य कार्यपालन अधिकारी सिर्फ शिकायत कर्ता को आश्वासन देने के अलावा कोई कार्यवाही करते नजर नहीं आते हैं आखिर ऐसा क्या? सूत्रों से मिल रही जानकारी से की जनपद पंचायत खड़गवां में ग्राम पंचायतों में आवास निर्माण कार्य का आंकड़ा पूरा करने में अधिकारी लगे हैं जबकि धरातल पर कहानी कुछ और है जिससे आवास निर्माण सिर्फ जनपद पंचायत खड़गवां के कागजी आंकड़ों में आवास निर्माण कार्य प्रगति की दौड़ में काफी आगे निकलता दिखाई दे रहा है? आखिर परत दर परत इन भ्रष्टाचारियों की पोल खुल रही है कई मामले एक के बाद एक सामने आ रहे हैं लेकिन सोचने का विषय यह है कि इतने सारे मामलों के बावजूद भी लोग बिना डरे अपने धंधों को, गलत कारनामों को धड़ल्ले से अंजाम दे रहे हैं और उन्हें जिला या ब्लॉक स्तरीय कार्यवाही का डर नहीं है। क्या इस बात से यह अंदाजा लगाया जा सकता है की जिला और ब्लॉक में भी सेटलमेंट का खेल चल रहा है क्या जिला और ब्लॉक के अधिकारी कर्मचारी साहब सभी इस भ्रष्टाचार के शहद में रोटी डुबो डुबोकर खा रहे हैं...?,

ऐसे कई सवाल है जो अधिकारियों के कार्य शैली को देखकर मन में उत्पन्न हो रहे.... ?

क्योंकि अगर उच्च अधिकारियों की संलिप्तता नहीं होती तो इतने बड़े बड़े आवास निर्माण कार्य में घोटाले करने से पहले निचले स्तर एक कर्मचारी हजार बार जरुर सोचते या फिर निचले स्तर के जो कर्मचारी हैं वह सब उच्च अधिकारियों को कुछ समझ ही नहीं रहे हैं? आखिर यह कैसे संभव है कि आवास मित्र, तकनीकी सहायक, ब्लॉक कोऑर्डिनेटर आदि किसी को भी इस संबंध में कोई भी जानकारी नहीं थी।

कोई भी इस चीज को कैसे मान सकता है? कि इतने बड़े कारनामे होने के बाद भी किसी को कानों कान खबर नहीं थी। या तो यह सभी जनपद पंचायत एवं मनरेगा के ग्राम पंचायत के अधिकारी कर्मचारी केवल शासन के द्वारा दिए जाने वाले वेतन को जेब में भरने का काम कर रहे थे या फिर उनके वेतन से अधिक उन्हें रिश्वत मिल रही थी जो उन्हें अपने कर्तव्य का पालन करने से रोक रहा था। हालांकि कि अभी जनपद पंचायत खड़गवां में हुए कई घोटाले की कहानी दर परत दर खुलेगी जिससे भ्रष्टाचार भी उजागर किया जाएगा?

अटल स्मृति वर्ष पर भाजपा मंडल सोनहत की संगठनात्मक बैठक संपन्न

गतिविधियां संगठन आधारित होंगी तो सहजता से लक्ष्य हासिल करेंगे

-संवाददाता-

बैकुण्ठपुर,25 दिसम्बर 2025 (घटती-घटना)।

विकासखंड सोनहत मुख्यालय अंतर्गत ग्राम कटगोड़ी मिनी स्टेडियम में भारतीय जनता पार्टी मंडल सोनहत की संगठनात्मक बैठक का आयोजन अटल स्मृति वर्ष के अवसर पर किया गया।, बैठक में स्पष्ट संदेश दिया गया कि संगठन आधारित गतिविधियां ही लक्ष्य तक पहुंचने का सबसे प्रभावी माध्यम हैं,और बूथ से लेकर मंडल स्तर तक कार्यकर्ताओं की सक्रियता से ही संगठन की शक्ति बढ़ती है। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी,भारत माता एवं पं. दीनदयाल उपाध्याय के छायाचित्र पर दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ, बैठक में

प्रमुख रूप से एमसीबी जिला संगठन प्रभारी बाबूलाल अग्रवाल, विधायक रेणुका सिंह, भाजपा कोरिया जिलाध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी, एमसीबी जिलाध्यक्ष चम्पादेवी पावले, जिला सहकारी बैंक उपाध्यक्ष जगदीश साहू की गरिमामयी उपस्थिति रही। बैठक की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष राजाराम राजवाड़े ने की। एमसीबी जिलाध्यक्ष चम्पादेवी पावले ने संगठनात्मक गतिविधियों की समीक्षा करते हुए आगामी कार्यक्रमों की रणनीति पर विस्तार से चर्चा की और सभी कार्यकर्ताओं से कार्यक्रमों को सफल बनाने की अपील की।

भाजपा जनसेवा का सशक्त माध्यम

विधायक रेणुका सिंह ने कहा कि आज भारतीय जनता पार्टी केवल एक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि जनसेवा का सशक्त माध्यम है, उन्होंने कहा कि भाजपा विश्व की सबसे बड़ी पार्टी है और इसका श्रेय समर्पित कार्यकर्ताओं को जाता है।

निष्ठा और सक्रियता से कार्यक्रम पूर्ण करें...

एमसीबी जिला संगठन प्रभारी बाबूलाल अग्रवाल ने कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता अपनी मेहनत से संगठन को सशक्त बनाता है। उन्होंने कहा कि क्षण भर की सूचना पर सैकड़ों कार्यकर्ता कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए उपस्थित हो जाते हैं। उन्होंने प्रदेश एवं जिला स्तर पर निर्धारित कार्यक्रमों को पूरी निष्ठा और सक्रियता से संपन्न कराने का आह्वान किया।

संगठन की मजबूती पर जोर : स्वागत उद्बोधन में भाजपा कोरिया जिलाध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी ने कहा कि संगठन में कार्यकर्ताओं को समय-समय पर विभिन्न जिम्मेदारियां मिलती हैं और वे संगठनात्मक कार्यों के क्रियान्वयन में अहम भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा का कार्यकर्ता सतत रूप से संगठन और समाज-सेवा में सक्रिय रहता है, जिससे बूथ स्तर पर संगठन मजबूत होता है।

कार्यकर्ताओं की व्यापक उपस्थिति

कार्यक्रम में भाजपा जिला मंत्री ईश्वर राजवाड़े, जिला पंचायत सदस्य व जिला मंत्री शिव कुमारी सोनपाकर, जनपद अध्यक्ष आशादेवी सोनपाकर, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी तीरथ राजवाड़े सहित मंडल पदाधिकारी, शक्ति केंद्र संयोजक-सह संयोजक, बूथ अध्यक्ष-सचिव एवं बी.एल.ए.-2 बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

सलामी गई...पर सवाल खड़े रह गए

सलामी गार्ड पर सरकार का वार...वीआईपी संस्कृति पर अधूरा प्रहार

■ औपनिवेशिक व्यवस्था हटाने का दावा...औपनिवेशिक सोच अब भी जिंदा...

■ सलामी बंद... लेकिन सबके लिए नहीं पुलिस को राहत या सिर्फ दिखावटी सुधार?

-अनिल सिन्हा-

रायपुर,25 दिसम्बर 2025 (घटती-घटना)। छत्तीसगढ़ सरकार ने सलामी गार्ड परंपरा में बदलाव कर एक ऐसा फैसला लिया है,जिसे काग़ज़ पर पढ़ने से लगता है कि अब शासन व्यवस्था औपनिवेशिक मानसिकता से बाहर निकल रही है,लेकिन ज़मीन पर उतरते ही सवाल यह बनता है क्या सचमुच सलामी खत्म हुई है,या सिर्फ 'कुछ लोगों' की सलामी रोकी गई है? सरकार का तर्क है कि सलामी गार्ड एक औपनिवेशिक व्यवस्था की विरासत है,जो पुलिस बल की कार्यक्षमता को प्रभावित करती है, यह तर्क सही भी लगता है,आखिर जनता की सुरक्षा के लिए तैनात पुलिस बल को हर दौरे में लाइन लगाकर 'जय हो' कराना किस आधुनिक लोकतंत्र की पहचान है? पर यहीं से व्यंग्य शुरू होता है, यह फैसला साहसिक दिखता जरूर है,लेकिन अभी भी यह आधा कदम आगे,एक कदम पीछे जैसा है, सलामी गार्ड हटाना प्रतीक है, पर असली लड़ाई उस सोच से है जो आज भी सत्ता को आम नागरिक से ऊँचा मानती है,जब वह सोच बदलेगी तब किसी आदेश की जरूरत नहीं पड़ेगी।

सलामी अब वीआईपी की हैसियत देखकर-

आदेश कहता है मंत्री, डीजीपी,वरिष्ठ अधिकारी अब दौरे पर सलामी नहीं लेंगे,लेकिन जैसे ही बात आती है संवैधानिक पदों,विशेष अतिथियों और राष्ट्रीय आयोजनों की सलामी फिर से खड़ी हो जाती है,सीना चौड़ा करके यानी संदेश साफ है सलामी बुरी है...पर सबके लिए नहीं,अगर यह औपनिवेशिक परंपरा थी, तो वह सिर्फ मंत्रियों के लिए ही औपनिवेशिक क्यों? राज्यपाल के सामने वह परंपरा अचानक संवैधानिक मर्यादा कैसे बन जाती है?

पुलिस सुधार या प्रतीकात्मक सुधार?

सरकार कहती है कि इस फैसले से पुलिस बल की कार्यक्षमता बढ़ेगी,लेकिन असली सवाल यह है क्या पुलिस बल की कार्यक्षमता सिर्फ सलामी से घट रही थी? क्या ट्रांसफर उद्योग,राजनीतिक दबाव, संसाधनों की कमी, थानों की बदहाली Colonial System नहीं हैं? क्या वीआईपी कल्चर सिर्फ सलामी से चलता है, या उसके पीछे पूरी व्यवस्था खड़ी है? अगर सरकार सच में पुलिस को 'कामकाजी बल' बनाना चाहती है, तो सलामी से ज्यादा ज़रूरी है फील्ड से अनावश्यक ड्यूटी हटाना, राजनीतिक हस्तक्षेप कम करना, जवाबदेही तय करना सलामी हटाना सुधार की शुरुआत हो सकती है, लेकिन इसे सुधार मान लेना आत्मसंतोष से ज्यादा कुछ नहीं।

लोकतंत्र का आईना सलामी नहीं,समानता चाहिए...

लोकतंत्र में सम्मान पद से नहीं, व्यवस्था से मिलता है, अगर एक मंत्री बिना सलामी के चल सकता है, तो दूसरा क्यों नहीं? अगर औपनिवेशिक परंपरा गलत है, तो वह हर स्थिति में गलत होनी चाहिए आंशिक नैतिकता भी दरअसल अनैतिकता ही होती है।

आदेश का सार (सरल भाषा में)

- आदेश क्रमांक : Gencor-35/2523/2025-HOME
- दिनांक: 19 दिसंबर 2025
- जारी विभाग: गृह (सामान्य) विभाग, छत्तीसगढ़ शासन

सरकार ने क्या फैसला लिया?- राज्य शासन ने सलामी गार्ड की मौजूदा व्यवस्था में व्यापक बदलाव करते हुए इसे, औपनिवेशिक परंपरा मानते हुए सामान्य दौरों, आगमन/प्रस्थान और निरीक्षण के दौरान पूरी तरह समाप्त करने का निर्णय लिया है।

अब किन्हें नहीं मिलेगी सलामी गार्ड?- अब निम्न परिस्थितियों में सलामी गार्ड नहीं दी जाएगी: मंत्रियों के सामान्य दौरे, आगमन / प्रस्थान, जिला भ्रमण, निरीक्षण कार्यक्रम, इसमें शामिल हैं: माननीय गृहमंत्री सभी मंत्रीगण, पुलिस महानिदेशक , अन्य वरिष्ठ पुलिस अधिकारी यानी, अब वीआइपी संस्कृति को औपचारिक तौर पर सीमित किया गया है।

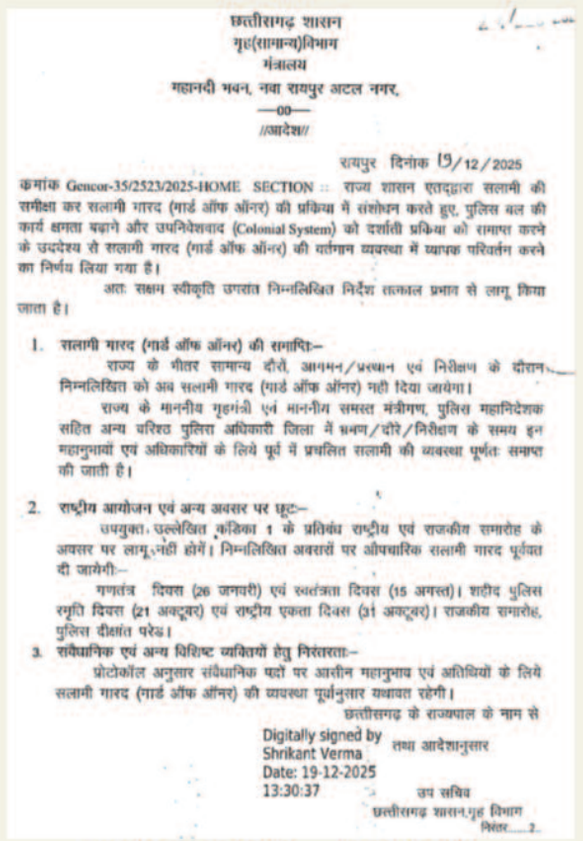

छत्तीसगढ़ शासन
गृह(सामान्य)विभाग
मंत्रालय
महानदी भवन, नवा रायपुर अटल नगर,
—00—
//आदेश//

रायपुर दिनांक 19/12/2025

क्रमांक Gencor-35/2523/2025-HOME SECTION :: राज्य शासन एतद्द्वारा सलामी की समीक्षा कर सलामी गारद (गार्ड ऑफ ऑनर) की प्रक्रिया में संशोधन करते हुए, पुलिस बल की कार्य क्षमता बढ़ाने और उपनिवेशवाद (Colonial System) को दर्शाती प्रक्रिया को समाप्त करने के उद्देश्य से सलामी गारद (गार्ड ऑफ ऑनर) की वर्तमान व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन करने का निर्णय लिया गया है।

अतः संक्षम स्वीकृति उपरांत निम्नलिखित निर्देश तत्काल प्रभाव से लागू किया जाता है।

1. सलामी गारद (गार्ड ऑफ ऑनर) की समाप्तिः—
राज्य के भीतर सामान्य दौरों, आगमन/प्रस्थान एवं निरीक्षण के दौरान निम्नलिखित को अब सलामी गारद (गार्ड ऑफ ऑनर) नहीं दिया जायेगा।
राज्य के माननीय गृहमंत्री एवं माननीय समस्त मंत्रीगण, पुलिस महानिदेशक सहित अन्य वरिष्ठ पुलिस अधिकारी जिला में भ्रमण/दौरे/निरीक्षण के समय इन महानुभावों एवं अधिकारियों के लिये पूर्व में प्रचलित सलामी की व्यवस्था पूर्णतः समाप्त की जाती है।

2. राष्ट्रीय आयोजन एवं अन्य अवसर पर छूटः—
उपयुक्त उल्लेखित कंडिका 1 के प्रतिबंध राष्ट्रीय एवं राजकीय समारोह के अवसर पर लागू नहीं होंगे। निम्नलिखित अवसरों पर औपचारिक सलामी गारद पूर्ववत दी जायेगीः—
गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) एवं स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त)। शहीद पुलिस स्मृति दिवस (21 अक्टूबर) एवं राष्ट्रीय एकता दिवस (31 अक्टूबर)। राजकीय समारोह, पुलिस दीक्षांत परेड।

3. संवैधानिक एवं अन्य विशिष्ट व्यक्तियों हेतु निरंतरताः—
प्रोटोकॉल अनुसार संवैधानिक पदों पर आसीन महानुभाव एवं अतिथियों के लिये सलामी गारद (गार्ड ऑफ ऑनर) की व्यवस्था पूर्वानुसार यथावत रहेगी।

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के नाम से
तथा आदेशानुसार
Digitally signed by Shrikant Verma
Date: 19-12-2025 13:30:37
उप सचिव
छत्तीसगढ़ शासन,गृह विभाग

संवैधानिक पद जिन्हें सलामी गार्ड मिलेगी...

- राज्यपाल
- संवैधानिक पदों पर आसीन महानुभाव
- प्रोटोकॉल के अंतर्गत विशिष्ट अतिथि इनके लिए सलामी गार्ड यथावत रहेगी।

सरकार का तर्क क्या है? आदेश में साफ कहा गया है कि...

- पुलिस बल की कार्य क्षमता बढ़ाने
- अनावश्यक औपनिवेशिक दिखावे को समाप्त करने
- संसाधनों का व्यावहारिक उपयोग सुनिश्चित करने
- के लिए यह निर्णय लिया गया है।

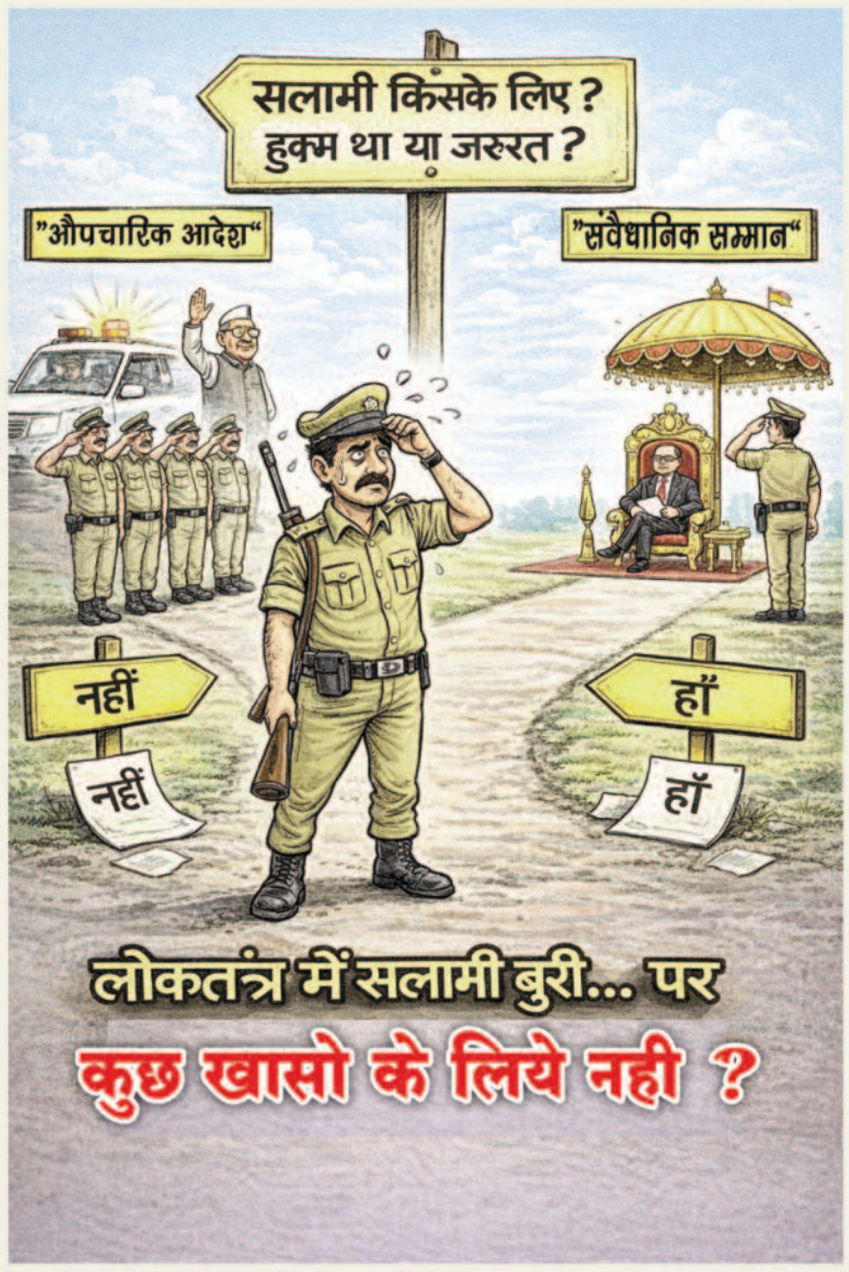

किन अवसरों पर छूट रहेगी?- कुछ राष्ट्रीय और संवैधानिक अवसरों पर सलामी गार्ड पहले की तरह दी जाएगी,राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस - 26 जनवरी, स्वतंत्रता दिवस - 15 अगस्त,शहीद पुलिस स्मृति दिवस - 21 अक्टूबर, राष्ट्रीय एकता दिवस - 31 अक्टूबर

यह फैसला क्यों अहम है?

- वीआईपी संस्कृति पर सरकारी लगाम
- पुलिस बल को प्रोटोकॉल से राहत
- प्रशासन में समानता का संदेश
- प्रतीकात्मक नहीं, व्यावहारिक शासन की दिशा

मुठभेड़ में सीसी मेंबर समेत 6 नक्सली ढेर

सीएम साय ने कहा...नक्सलवाद पर निर्णायक प्रहार

नक्सल मुक्त भारत का संकल्प हो रहा साकार

रायपुर,25 दिसम्बर 2025। छत्तीसगढ़ के पड़ोसी राज्य ओडिशा के कंधमाल में सुरक्षाबलों ने एनकाउंटर में 6 नक्सलियों को मार गिराया है। इनमें 1 करोड़ से ज्यादा का इनामी सेंट्रल कमेटी मेंबर गणेश उईके (69) भी शामिल है। दो महिला नक्सली भी मारी गई हैं। मारे गए नक्सलियों के शव और हथियार बरामद कर लिए गए हैं। सुरक्षाबलों को कंधमाल जिले के चाकापाड़ इलाके में नक्सलियों की मौजूदगी का इनपुट मिला था। इसी इनपुट के आधार पर 23 टीमों को ऑपरेशन के लिए भेजा गया था। इनमें 20 स्पेशल ऑपरेशंस ग्रुप, दो सीआरपीएफ और एक बीएसएफ टीमें शामिल थीं। यह ऑपरेशन कंधमाल जिले के चाकापाड़ थाना क्षेत्र और गंजाम जिले के राम्भा वन क्षेत्र में चलाया गया। अभियान के दौरान अलग-अलग स्थानों पर माओवादियों और SOG जवानों के बीच कई बार गोलीबारी हुई। मुठभेड़ के बाद इलाके में सर्चिंग की गई, जिसमें 5 नक्सलियों के शव मिले। इनमें 3 पुरुष और 2 महिलाएं हैं। सभी माओवादी वर्दी में थे। मौके से 2 इंसास राइफल और एक 303 राइफल बरामद हुई है। सीएम विष्णुदेव साय ने एक्स पर पोस्ट कर कहा है कि नक्सलवाद के विरुद्ध चल रही निर्णायक लड़ाई में आज ओडिशा के कंधमाल-गंजाम सीमावर्ती वन क्षेत्र में सुरक्षा बलों ने एक और बड़ा प्रहार किया है।

हिंसा का रास्ता छोड़िए...मुख्यधारा से जुड़िए : सीएम

सीएम साय ने कहा...यह कार्रवाई स्पष्ट संदेश है कि अब नक्सल हिंसा के लिए कोई सुरक्षित ठिकाना नहीं बचा है। 31 मार्च 2026 तक नक्सल उन्मूलन के संकल्प को पूरा करने की दिशा में यह एक ठोस और निर्णायक कदम है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृढ़ नेतृत्व और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के सशक्त मार्गदर्शन में देश पूरी ताकत, स्पष्ट नीति और अटूट इच्छाशक्ति के साथ नक्सल-मुक्त भारत की ओर आगे बढ़ रहा है। मैं इस साहसिक और प्रभावी अभियान के लिए सुरक्षा बलों को नमन करता हूं। सरकार का संदेश बिल्कुल साफ है, हिंसा का रास्ता छोड़िए,मुख्यधारा से जुड़िए,अन्यथा कानून अपना काम करेगा। शांति, विकास और विश्वास ही नए भारत की पहचान है।

छत्तीसगढ़ के नारायणपुर में जवान ने की आत्महत्या

अबूझमाड़ के कोड़नार कैंप में मची खलबली

नारायणपुर,25 दिसम्बर 2025। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित जिले नारायणपुर से एक हृदयविदारक घटना सामने आई है, जहाँ जिला बल के एक जवान ने अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली। प्राप्त जानकारी के अनुसार, जवान पिंगल जूरी ने अपनी सर्विस राइफल से खुद को गोली मार ली। यह घटना कोहकमेटा थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले कोड़नार कैंप की है। बताया जा रहा है कि आज,25 दिसंबर की सुबह जब जवान अपनी नियमित ड्यूटी पर तैनात था,तभी उसने अचानक यह खौफनाक कदम उठाया। गोली की आवाज सुनकर कैंप में मौजूद अन्य सुरक्षाकर्मी तुरंत मौके पर पहुंचे,लेकिन तब तक स्थिति अत्यंत नाजुक हो चुकी थी।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने 187 करोड़ के 23 कार्यों का किया लोकार्पण-भूमिपूजन

रायपुर,25 दिसम्बर 2025। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने आज राजधानी रायपुर के फुंडहर खेल मैदान में आयोजित कार्यक्रम में रायपुर नगर निगम क्षेत्र में 186 करोड़ 98 रुपए लागत के 23 कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन किया। इनमें 185 करोड़ 49 लाख रुपए के 17 कार्यों का भूमिपूजन और एक करोड़ 49 लाख रुपए के छह कार्यों का लोकार्पण शामिल है। मुख्यमंत्री ने एक करोड़ रुपए की लागत से तेलीबांधा चौक पर निर्मित सिंदूर पथ, 49 लाख रुपए से अटल एक्सप्रेस-वे में फुंडहर चौक पर विकसित अटल परिसर और कोर्ट परिसर के पास बनाए गए वनभैंसा के साथ ही आईएसबीटी, मोवा ब्रिज और विधानसभा ब्रिज के नीचे बनाए गए बॉक्स क्रिकेट पिच का लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री श्री साय ने पंडरी बस स्टैंड के पीछे 14 करोड़ 71 लाख रुपए तथा नरैया तालाब के पास 14 करोड़ 66 लाख रुपए के कामकाजी महिला छात्रावास का भूमिपूजन किया। उन्होंने मुख्यमंत्री नगरोत्थान योजना के तहत तेलीबांधा चौक के पास 39 करोड़ 31 लाख रुपए के टेक्नीकल टॉवर और खम्हारडीह में 20 करोड़ 93 लाख रुपए के 2500 किलोलीटर क्षमता के नवीन जलागार का भी भूमिपूजन किया। श्री साय ने दलदल सिवनी अम्युजमेंट पार्क के पास 11 करोड़ 42 लाख रुपए के नालंदा परिसर, पचपेड़ी नाका से सीएसईबी चौक तक 13

करोड़ 39 लाख रुपए के गौरवपथ तथा 11 करोड़ 17 लाख रुपए के पीएम ई-बस डिपो एवं दो करोड़ 79 लाख रुपए के पीएम ई-बस डिपो के लिए इलेक्ट्रिक सब-स्टेशन का भूमिपूजन किया। उन्होंने लाभांडी और फुंडहर में 35 करोड़ 73 लाख रुपए के राइजिंग एवं डिस्ट्रीब्युशन पाइपलाइन, विधायक कॉलोनी से अविनाश वन होते हुए एनएच-53 तक एक करोड़ 94 लाख रुपए के नाला पुनर्निर्माण, प्रधानमंत्री आवास योजना में तीन करोड़ 23 लाख रुपए के सीसी रोड एवं नाली निर्माण तथा श्रीराम मंदिर के पास एक करोड़ 98 लाख रुपए के आरसीसी कवर्ड नाली निर्माण का भूमिपूजन किया। मुख्यमंत्री ने रायपुर-ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र में तीन करोड़ रुपए के मुख्य मार्गों के सुदृढ़ीकरण, बीटी रिनिवल, ड्रेन एवं अन्य कार्यों, रायपुर-उत्तर विधानसभा क्षेत्र में तीन करोड़ रुपए के मुख्य मार्गों के सुदृढ़ीकरण, बीटी रिनिवल, ड्रेन एवं अन्य कार्यों, रायपुर-दक्षिण विधानसभा क्षेत्र में दो करोड़ 99 लाख रुपए के दतरेंगा मोड़ से चन्द्रा टाउन, महादेव घाट रोड तक सड़क सुदृढ़ीकरण, दो करोड़ 52 लाख रुपए से शहर के विभिन्न स्थानों में सड़क मरम्मत एवं बीटी टॉपिंग कार्य तथा दो करोड़ 71 लाख रुपए से शहर के विभिन्न मार्गों में बीटी टॉपिंग एवं पैच रिपेयर कार्य का भूमिपूजन किया।

हितग्राहियों को भवन निर्माण अनुज्ञा पत्र और चेक वितरित किए

मुख्यमंत्री साय ने कार्यक्रम में प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) 2.0 के पांच हितग्राहियों कांती ढीढ़ी, अजय शर्मा, योगेश साहू, पवन साहू और काशीराम वर्मा को भवन निर्माण अनुज्ञा पत्र वितरित किए। उन्होंने पीएम स्वनिधि योजना के पांच हितग्राहियों उमा जोशी, फूलबाई गिरी, निशा द्विवेदी, रामप्यारी और भगवती यादव को 50-50 हजार रुपए का चेक प्रदान किया।

पैरावट में छिपाकर रखा था तेंदुए के पंजे,आरोपी को वनविभाग ने पकड़ा,पूछताछ में होगा खुलासा

धमतरी,25 दिसम्बर 2025। छत्तीसगढ़ के धमतरी में तेंदुए का शव मिला था, जिसके चारों पंजे गायब थे। इन पंजों को निकालने वाले शिकारी आरोपी को पुलिस ने दबोच लिया है। पकड़े गए आरोपियों के कब्जे से मृत तेंदुआ के नाखून और हथियार बरामद किए गए हैं। वन विभाग आगे की कार्रवाई में जुट गया है. दरअसल धमतरी जिले के मगरलोड क्षेत्र के उत्तर सिंगपुर वन परिक्षेत्र कक्ष क्रमांक 23 कोरगांव कनडबरा के जंगल में कुएं में एक तेंदुआ के गिरने की जानकारी वन विभाग को मिली थी. वहीं स्थानीय चरवाहा की सूचना पर मौके पर वन विभाग की टीम जब पहुंची, तो मृत तेंदुआ का शव कुएं में नहीं पाया गया.. वहीं कुछ दूर जंगल में मृत तेंदुआ का शव पाया गया...वन विभाग को तेंदुए के शिकार होने का आशंका हुई. जिस के बाद वन अमले ने आसपास के लोगों से पूछताछ की। मृत अवस्था में पाए गए तेंदुए की उम्र लगभग एक वर्ष बताया जा रहा है और मृत तेंदुआ को देखकर ऐसा लगा की शिकारी द्वारा शिकार किया गया होगा. मृत तेंदुए के चारों पैर के पंजे कटे हुए पाए गए थे। वन विभाग को अवैध शिकार की आशंका हुई थी। इसके बाद आसपास वन विभाग के द्वारा संदिग्ध लोगों से पूछताछ की जा रही थी। इस दौरान वन अमले को बड़ी सफलता हाथ लगी है। मृत तेंदुआ के पैरों के नाखून और पंजे काटकर पैरा में छुपा कर रखने वाले एक आरोपी को वन विभाग ने धर दबोचा।

गैंगस्टर मयंक सिंह ने खोले कई राज,बताया हथियार सप्लाई वसूली और हवाला रकम की कैसे होती है डील

रायपुर,25 दिसम्बर 2025। कुख्यात गैंगस्टर मयंक सिंह उर्फ सुनील मीणा को रामगढ़ जेल से झारखंड पुलिस कड़ी सुरक्षा में रायपुर लेकर पहुंची और कोर्ट के आदेश के बाद प्रोडेक्शन वारंट पर रायपुर पुलिस ने गिरफ्तार किया है। जिसके बाद कोर्ट में पूछताछ के लिए 4 दिन का रिमांड आवेदन लगाया। रिमांड के दौरान रात में हुई पूछताछ में मयंक सिंह ने कोल और कंस्ट्रक्शन कारोबारी के दफ्तर के बाहर फायरिंग करवाने की वारदात करवाना स्वीकार किया है। पूछताछ में मयंक ने बताया है कि इस ग्रुप को कई बार कॉल, पत्र समेत सीधे तौर पर करीब 1 करोड़ रूपये की फिरौती मांगी थी लेकिन नहीं देने पर पहले इनके झारखंड के साइट पर अमन साव के गुर्गों के जरिये फायरिंग करवाई थी। उसके बाद भी लेवी नहीं देने पर अमन से बोलकर पंजाब के शूटरों से

तेलीबांधा स्थित कंपनी के दफ्तर के बाहर फायरिंग करवाना स्वीकार कर रहा है। गिरफ्तार गैंगस्टर मयंक सिंह लारेंस विश्नोई गैंग से भी जुड़ा होने की वजह से स्थानीय कारोबारी के दफ्तर के बाहर फायरिंग कराने से लेकर हवाला और हथियार सप्लाई के पूरे नेटवर्क को लेकर पूछताछ की गई। इसके साथ ही पूछताछ में इस बात का भी खुलासा हुआ है कि झारखंड से हवाला के जरिये वसूली की रकम यूरोप भेजी जाती थी, जो यूरोप से मलेशिया और थाईलैंड तक पहुंचती थी। इतना ही नहीं मयंक सिंह के लिए कुआलालंपुर के पाक-पंजाब रेस्टोरेंट के कर्मचारी के जरिए लेन-देन होता था जो पाकिस्तान के एजेंटों तक पैसा पहुंचाने की बात भी सामने आई है। इसके अलावा मयंक सिंह विदेशी एजेंटो के जरिए अमन साहू गैंग को हथियार सप्लाई करवाने का खुलासा हुआ है। बताया ये भी जा रहा है मयंक सिंह विदेशी हथियारों को ड्रोन के जरिये पंजाब में गिरवाता था और फिर सड़क मार्ग के जरिये पंजाब से रांची तक सप्लाई करवाये हैं। पुलिस को मिले करोड़ों रुपये का हवाला लेन-देन की जानकारी के बारे में भी मयंक सिंह से पूछताछ की जा रही है। पुलिस रिकार्ड के अनुसार मयंक सिंह पर हत्या,रंगदारी,धमकी, फायरिंग और आपराधिक साजिश समेत करीब 45 से अधिक छोटे-बड़े मामले दर्ज हैं। साथ ही छत्तीसगढ़ में मयंक के खिलाफ कोरबा, रायपुर, रायगढ़ में भी कई मामले दर्ज हैं। वह लंबे समय तक मलेशिया में बैठकर अपने गैंग का संचालन करता रहा। जानकारी यह भी है कि उसने कई उद्योगपतियों, बड़े कारोबारियों और नेताओं से रंगदारी मांगी थी।

खेल महोत्सव बना देश का सबसे बड़ा जन आंदोलन : सांसद बृजमोहन अग्रवाल

रायपुर,25 दिसम्बर 2025। सांसद एवं वरिष्ठ भाजपा नेता बृजमोहन अग्रवाल के नेतृत्व में 29 अगस्त से आयोजित रायपुर सांसद खेल महोत्सव का गुरुवार को छत्तीसगढ़ के निर्माता, भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती 'सुशासन दिवस' के अवसर पर राजधानी रायपुर स्थित पंडित दीन दयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम में भव्य समापन समारोह संपन्न हुआ। समारोह में माननीय मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय की गरिमामयी उपस्थिति रही। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी एवं केंद्रीय खेल मंत्री मनसुख मंडावीया जी ने वर्चुअल माध्यम से आयोजन से जुड़कर खिलाड़ियों और युवाओं का उत्साहवर्धन किया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खिलाड़ियों,युवाओं एवं उनके अभिभावकों से संवाद करते हुए कहा कि, खिलाड़ियों के जोश, जज्बे और उत्साह में उन्हें सशक्त भारत के दर्शन हो रहे हैं। आज देश के करोड़ों युवा आत्मविश्वास और विश्वास से भरे हुए हैं और हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रहे हैं। सांसद खेल महोत्सव केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक जन आंदोलन बन चुका है, जो युवाओं को खेल, स्वास्थ्य और अनुशासन के माध्यम से राष्ट्र निर्माण से जोड़ रहा है।

सत्ता से सवाल पूछने की हिम्मत करने वाला क्या कांग्रेस में एक ही चेहरा बचा है?

क्या छत्तीसगढ़ में विपक्ष अब एक व्यक्ति का नाम रह गया है? क्या सचमुच कांग्रेस में सवाल पूछने वाला एक ही चेहरा बचा है?

भूपेश बघेल अकेले क्यों पड़े? कांग्रेस की चुप्पी पर बड़ा सवाल एक बोल रहा है...बाकी देख रहे हैं...क्या यही विपक्ष है?

भाजपा के लिए 'मौन कांग्रेस' सबसे बड़ा वरदान विपक्ष की खामोशी: बिना लड़े 2028 की राह?

कांग्रेस बनाम कांग्रेस : अंदरूनी राजनीति का पोस्टमॉर्टम सत्ता गई...संघर्ष भी गया?

न्यूज डेस्क

रायपुर,25 दिसम्बर 2025 (घटती-घटना)। भूपेश बघेल ने 1980 के दशक में छात्र राजनीति और युवा कांग्रेस से अपनी राजनीतिक यात्रा शुरू की,वे उन नेताओं में माने जाते हैं जिन्होंने विपक्ष में रहते हुए संगठन को जीवित रखा और सत्ता में रहते हुए निर्णय लेने का साहस दिखाया,आज भी छत्तीसगढ़ कांग्रेस की राजनीति में वे एक केंद्रीय धुरी बने हुए हैं चाहे समर्थन में हों या सवालों के केंद्र में, छत्तीसगढ़ की मौजूदा राजनीति को देखें तो यह सवाल सिर्फ भावनात्मक नहीं,बल्कि राजनीतिक हकीकत से जुड़ा हुआ दिखता है,15 वर्षों तक भाजपा की सत्ता के दौर में जिस नेता ने लगातार सरकार को घेरा,सड़कों से लेकर सदन तक सवाल उठाए, संगठन को ज़िंदा रखा, वह थे भूपेश बघेल, प्रदेश अध्यक्ष रहते हुए उन्होंने सत्ता-विरोध को एक आंदोलन का रूप दिया। नतीजा यह हुआ कि कांग्रेस 15 साल बाद सत्ता में लौटी और वही नेता मुख्यमंत्री बने, छत्तीसगढ़ की राजनीति आज जिस मोड़ पर खड़ी है, वहां एक असहज लेकिन ज़रूरी सवाल सामने आता है, क्या सत्ता से सवाल पूछने का साहस अब सिर्फ एक ही नेता में बचा है? और अगर हाँ, तो बाकी विपक्ष आखिर कर क्या रहा है? पूर्वमुख्यमंत्री भूपेश बघेल केंद्र बिंदु बने हुए महादेव सट्टा ऐप मामला, कोयला लेवी घोटाला और हाल में घोटाले के आरोप में पुत्र की गिरफ्तारी के साथ खुद भुपेश बघेल पर कई आरोपो बावजूद बघेल के तेवरों में कोई कमी नहीं आई है, राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बघेल 'रक्षात्मक' होने के बजाय 'आक्रामक' राजनीति का रास्ता चुन चुके हैं, भूपेश बघेल ने हाल के दिनों में न केवल राज्य सरकार बल्कि केंद्र सरकार और केंद्रीय जांच एजेंसियों को भी सीधे निशाने पर लिया है,बघेल लगातार यह आरोप लगा रहे हैं कि ED और CBI जैसी एजेंसियां राजनीतिक प्रतिशोध के तहत काम कर रही हैं। वे सार्वजनिक मंचों से कहते रहे हैं कि उन्हें डराने की कोशिश की जा रही है, लेकिन वे 'डरने वाले नहीं हैं', छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद प्रदेश कांग्रेस में एक अजीब सी खामोशी देखी जा रही है, जहां एक समय पार्टी के पास दिग्गजों की पूरी फौज हुआ करती थी,वहीं अब विष्णुदेव साय सरकार के खिलाफ विरोध की कमान अकेले पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने थाम रखी है। राजनीतिक गलियारों में यह सवाल तेजी से गूंज रहा है बाकी बड़े नेता कहां हैं?

भूपेश अकेले क्यों पड़े?

यह महज़ संयोग नहीं है कि छत्तीसगढ़ में सत्ता से टकराने की आवाज़ एक चेहरे तक सिमट गई है, सवाल यह नहीं कि भूपेश बघेल क्यों बोल रहे हैं, सवाल यह है कि बाकी क्यों नहीं बोल रहे? कांग्रेस के भीतर आज एक अघोषित व्यवस्था चल रही है जो नेता पूर्व मंत्री रहे, आज 'अनुभव' का ताज पहनकर चुप हैं, जो संगठनात्मक पदों पर हैं, वे प्रेस नोट तक सीमित हैं, जो विधानसभा में हैं, वे सवाल पूछने से ज़्यादा संख्या गिनने में व्यस्त हैं, नाम क्यों नहीं बोलते? क्योंकि बोलने से सुविधा छिनती है, चुप रहने से सुरक्षा मिलती है और इस समीकरण में भूपेश बघेल फिट नहीं बैठते,क्योंकि वह जांच एजेंसियों के दबाव में हैं, राजनीतिक तौर पर सबसे असुरक्षित हैं और फिर भी सत्ता से टकरा रहे हैं यह अकेलापन नेतृत्व की कमजोरी नहीं,सामूहिक कायरता का आईना है, अगर कांग्रेस में 1 बोल रहा है, 10 देख रहे हैं,20 इंतज़ार कर रहे हैं तो यह विपक्ष नहीं,स्वार्थों का क्लब बन जाता है।

भाजपा के लिए यह चुप्पी कितनी फायदेमंद है?

राजनीति में विरोधी की सबसे बड़ी ताकत उसका कमज़ोर विपक्ष होता है, और आज भाजपा को छत्तीसगढ़ में वही वरदान मिला है,भाजपा को क्या मिल रहा है? बिना संघर्ष की सरकार,न सड़क पर दबाव, न सदन में चुनौती,एजेंसी नैरेटिव पर एकाधिकार,भूपेश अकेले निशाने पर, बाकी कांग्रेस 'डैमेज कंट्रोल' में नहीं,'सेल्फ़ सेव' में, विपक्ष की फूट का लाभ भाजपा को हमला करने की जरूरत नहीं, कांग्रेस खुद अपने नेताओं को अकेला छोड़ रही है,जनता में भ्रम अगर विपक्ष ही नहीं बोलेगा, तो सरकार गलत कैसे होगी? साफ़ शब्दों में कहे तो कांग्रेस की चुप्पी भाजपा के लिए सबसे सस्ती और सबसे असरदार रणनीति बन चुकी है,भाजपा को न आंदोलन से निपटना पड़ रहा है, न विपक्षी एकजुटता से,बस इंतजार है कि एक नेता थके,टूटे या फँसे, और खेल खत्म।

क्या कांग्रेस खुद अपने पतन की पटकथा लिख रही है?

इतिहास खुद को दोहराता है लेकिन कांग्रेस हर बार उससे सीखने से इनकार कर देती है,लक्षण साफ़ हैं सत्ता जाने के बाद संगठन सुस्त, मुद्दों पर प्रतिक्रिया नहीं,सिर्फ़ प्रतिक्रिया की औपचारिकता,नेतृत्व से ज्यादा 'सेफ़्टी' की चिंता, संघर्ष से ज़्यादा 'अगले समीकरण' की प्रतीक्षा,यह वही कांग्रेस है जिसने 15 साल संघर्ष के बाद सत्ता पाई और अब 1-2 साल में ही संघर्ष से थक चुकी है,अगर पार्टी यह मान चुकी है कि एक नेता लड़ लेगा,हम बाद में क्रेडिट ले लेंगे,तो यह राजनीति नहीं, आत्मघाती रणनीति है,क्योंकि नेता अकेले नहीं जीतते,आंदोलन अकेले नहीं बनते,और सत्ता वापसी बिना जोखिम के नहीं होती।

भूपेश के बाद कौन? नेतृत्व शून्य का असहज सच...

यह सवाल आज कांग्रेस के भीतर फुसफुसाहट नहीं, भयानक सन्नाटा बन चुका है, छत्तीसगढ़ में अगर आज पूछा जाए भूपेश बघेल के बाद कांग्रेस का चेहरा कौन? तो जवाब में नाम नहीं, नज़रें झुक जाती हैं, क्योंकि सच यह है कि कोई सर्वमान्य नेता नहीं, कोई जमीनी स्वीकार्यता वाला चेहरा नहीं,कोई ऐसा नेता नहीं जो सत्ता से टकराने का जोखिम उठा रहा हो भूपेश बघेल से असहमति हो सकती है,उनके कार्यकाल पर बहस हो सकती है,लेकिन एक तथ्य निर्विवाद है,आज कांग्रेस में उनके कद का कोई दूसरा नेता मैदान में खड़ा ही नहीं है, यह नेतृत्व का संकट नहीं, नेतृत्व निर्माण की विफलता है, जो पार्टी 5 साल सत्ता में रही,वह एक भी दूसरा जन-नेता तैयार नहीं कर पाई यह केवल चूक नहीं,राजनीतिक अपराध है।

कांग्रेस बनाम कांग्रेस...अंदरूनी राजनीति का पोस्टमॉर्टम

छत्तीसगढ़ कांग्रेस की सबसे बड़ी लड़ाई भाजपा से नहीं है,उसकी असली लड़ाई है कांग्रेस बनाम कांग्रेस, भीतर क्या चल रहा है? एक खेमा चाहता है टकराव, दूसराखेमा चाहता है समझौता,तीसरा खेमा चाहता है 'देखते हैं' परिणाम? कोई स्पष्ट लाइन नहीं, कोई सामूहिक रणनीति नहीं,कोई साझा आंदोलन नहीं,पार्टी में आज तीन किस्म के नेता हैं,लड़ने वाले बहुत कम,संतुलन साधने वाले ज़्यादा,मौन साधक सबसे ज़्यादा और राजनीति में मौन सबसे बड़ा सहयोग होता है सत्ता के लिए, यह अंदरूनी राजनीति धीरे-धीरे भूपेश बनाम बाकी कांग्रेस में बदलती जा रही है, और जब पार्टी का एक धड़ा यह सोच ले कि अगर यह फँसेगा तो रास्ता साफ होगा तो समझ लीजिए, पार्टी खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी नहीं, आरी चला रही है।

क्या भाजपा बिना लड़े 2028 की राह साफ कर चुकी है?

यह सवाल अतिशयोक्ति नहीं,रणनीतिक यथार्थ है,भाजपा को क्या करना पड़ रहा है? न बड़े आंदोलन से निपटना, न सशक्त विपक्ष को जवाब देना,न वैकल्पिक नेतृत्व की चिंता पर क्यों? क्योंकि कांग्रेस का विपक्ष बिखरा हुआ है, कांग्रेस का नेतृत्व भ्रम में है,कांग्रेस का संगठन इंतजार में है, राजनीति में इससे बेहतर स्थिति किसी सत्तारूढ़ दल को नहीं मिलती, भाजपा आज यह देख रही है, एक नेता बोल रहा है,बाकी पार्टी चुप है,जनता के मुद्दे बिना आंदोलन के ठंडे पड़ रहे हैं अगर यही स्थिति 2026-27 तक बनी रही, तो 2028 में भाजपा को लड़ाई लड़नी ही नहीं पड़ेगी, क्योंकि चुनाव से पहले विपक्ष का टूटना, चुनाव जीतने से आधा काम पहले ही कर देता है।

सत्ता बदली,पर विपक्ष का चरित्र नहीं बदला?

2023 के बाद सत्ता फिर भाजपा के पास है,स्वाभाविक था कि कांग्रेस एक मजबूत, आक्रामक विपक्ष की भूमिका निभाए, लेकिन जमीनी सच्चाई यह है कि कांग्रेस के अधिकांश पूर्व मंत्री और बड़े संगठनात्मक नेता या तो खामोश हैं,या फिर सत्ता के साथ 'कार्य-समंजन' की सुरक्षित राजनीति में लगे दिखते हैं,जनता से जुड़े मुद्दे महंगाई,बेरोजगारी,धान खरीदी,आदिवासी अधिकार,प्रशासनिक मनमानी इन पर संगठित विपक्षी आवाज नजर नहीं आती।

कठिन परिस्थितियों में भी मुखर क्यों हैं भूपेश?

यह विडंबना ही है कि जिन पर सबसे ज़्यादा जांच,दबाव और आरोप हैं,जिनके परिवार तक पर कार्रवाई हो चुकी है, जिनके बारे में रोज 'जेल जाने की अटकलें' चलाई जाती हैं,वही नेता सबसे ज्यादा मुखर है,भूपेश बघेल सत्ता की नीतियों पर खुलकर सवाल करते हैं,सड़क से सदन तक बयान देते हैं,और यह जोखिम जानते हुए भी चुप नहीं बैठते कि अगला निशाना वे खुद हो सकते हैं,इसके उलट जो नेता अपेक्षाकृत सुरक्षित हैं, जिन पर कोई दबाव नहीं है,जिनके पास संसाधन और संगठन दोनों हैं उनकी भूमिका सिर्फ उपस्थिति दर्ज कराने तक सीमित दिखती है।

सवाल सिर्फ भूपेश का नहीं,कांग्रेस की आत्मा का है...

यह बहस किसी एक व्यक्ति को महिमामंडित करने की नहीं है। सवाल यह है कि क्या विपक्ष का धर्म निभाना अब 'जोखिम' बन चुका है? क्या सत्ता से टकराने के बजाय सत्ता से तालमेल ही नई राजनीति है? और क्या कांग्रेस में सत्ता में वापसी की चाह सिर्फ भाषणों तक रह गई है? अगर विपक्ष सिर्फ इंतजार करे कि सत्ता खुद गलती करे और अगला चुनाव आ जाए,तो यह विपक्ष नहीं,सुविधा की राजनीति कहलाएगी।

अकेली आवाज भी आईना होती है...

आज की तारीख़ में यह कहना असहज जरूर है,पर झूठ नहीं छत्तीसगढ़ में विपक्ष की धार सबसे साफ़ तौर पर भूपेश बघेल की आवाज में ही सुनाई देती है, हो सकता है उन पर आरोप हों, हो सकता है उनके कार्यकाल पर सवाल हों लेकिन विपक्ष में रहकर सत्ता से सवाल पूछने का साहस उन्हें आज भी एक बड़ा जननेता बनाता है,बाक़ी नेताओं को तय करना होगा, क्या वे सिर्फ सत्ता आने का सुख भोगना चाहते हैं,या सत्ता लाने के लिए संघर्ष भी करना चाहते हैं, क्योंकि लोकतंत्र में चुप विपक्ष, सत्ता के लिए सबसे बड़ा वरदान होता है।

सत्ता गई...लेकिन संघर्ष नहीं गया...

2023 में सत्ता फिर भाजपा के पास चली गई,आम तौर पर माना जाता है कि सत्ता से बाहर गया नेता या तो चुप हो जाता है,या सुरक्षित कोने में बैठकर हालात का इंतजार करता है,लेकिन छत्तीसगढ़ में तस्वीर उलटी है,आज भी पूर्व मुख्यमंत्री होने के बावजूद,अपने कार्यकाल को लेकर लगातार जांचों के घेरे में, अपने बेटे की गिरफ्तारी जैसी व्यक्तिगत पीड़ा झेलते हुए, रोज 'अब जेल जाएंगे' जैसी चर्चाओं का सामना करते हुए भूपेश बघेल चुप नहीं हैं,वह आज भी सरकार की नीतियों पर खुलकर सवाल करते हैं,आदिवासी मुद्दों पर सड़क से संसद तक बोलते हैं,किसान, धान खरीदी, बेरोजगारी,प्रशासनिक मनमानी पर मुखर हैं,सत्ता को यह एहसास दिलाते हैं कि विपक्ष अभी जिंदा है,और बाकी कांग्रेस कहा? यहीं से असली सवाल शुरू होता है,जहां एक नेता जांच एजेंसियों के निशाने पर है व्यक्तिगत,राजनीतिक और पारिवारिक दबाव झेल रहा है,फिर भी सत्ता से टकरा रहा है,वहीं दूसरी ओर दर्जनों पूर्व मंत्री,संगठन के बड़े चेहरे,सत्ता में रहते समय 'क्रांतिकारी' दिखने वाले नेता आज या तो मौन हैं,या फिर सत्ता के साथ 'समंजस्य' बैठाकर अपने-अपने व्यापार, ठेके और हितों में व्यस्त हैं...ना आंदोलन...ना रणनीति...ना सड़क...ना सदन...ऐसे में सवाल उठता है क्या कांग्रेस में विपक्ष की जिम्मेदारी सिर्फ एक व्यक्ति पर छोड़ दी गई है?

क्या विपक्ष का मतलब अब सिर्फ सत्ता का इंतजार है?

लोकतंत्र में विपक्ष का काम सिर्फ चुनाव का इंतजार करना नहीं होता,विपक्ष का काम होता है सत्ता को असहज करना,गलत नीतियों पर रोक लगाना,जनता की आवाज बनना और जोखिम उठाना अगर विपक्ष सिर्फ यह सोच ले कि जब सत्ता आएगी, तब देखेंगे,तो यह राजनीति नहीं, स्वार्थ की साझेदारी कहलाती है।

संघर्ष अकेला भी इतिहास बनाता है : भूपेश बघेल पर आरोप हो सकते हैं, उनके कार्यकाल पर बहस हो सकती है, उनकी नीतियों से असहमति भी हो सकती है,लेकिन एक बात नकारना मुश्किल है आज छत्तीसगढ़ में सत्ता से टकराने का साहस सबसे ज्यादा उन्हीं में दिखता है,जब बाकी नेता सुरक्षित चुप्पी ओढ़े हुए हैं,तब कठिन परिस्थितियों में भी मुखर रहना उन्हें सिर्फ नेता नहीं, एक जुझारू जन-राजनीतिक चेहरा बनाता है, इतिहास गवाह है सत्ता कभी चुप्पी से नहीं बदलती,सत्ता बदलती है सवालों से, और अगर सवाल पूछने वाला अकेला रह जाए, तो यह उसकी कमजोरी नहीं, बाकी सबकी राजनीतिक कायरता का प्रमाण होता है।

विपक्ष नहीं बचे,सिर्फ़ एक आदमी बचा है : छत्तीसगढ़ की राजनीति आज एक असहज सच्चाई से जूझ रही है विपक्ष नाम की संस्था लगभग मृतप्राय है,और उसके शव पर सिर्फ़ एक आदमी खड़ा दिखता है, वह आदमी है,भूपेश बघेल। सत्ता से सवाल पूछना अब अपराध हो गया है? आज छत्तीसगढ़ में सत्ता से सवाल पूछना, गलत नीतियों पर आवाज उठाना,आदिवासी-किसान-युवा के हक़ की बात करना राजनीति नहीं,जोखिम बन चुका है,और यही वजह है कि कांग्रेस का बड़ा हिस्सा जो सत्ता में रहते समय क्रांतिकारी हुआ करता था, आज या तो ड्रॉइंग रूम पॉलिटिक्स में है,सत्ता से 'सेटिंग' में है या फिर इस इंतजार में है कि जो फँसा है, वही लड़े; हम क्यों बोलें?

जिसे सबसे ज्यादा डरना चाहिए,वही सबसे निडर क्यों है?: विडंबना देखिए जिस नेता पर सबसे ज्यादा जांचें हैं,जिसके कार्यकाल को रोज कटघरे में खड़ा किया जाता है,जिसका बेटा जेल जा चुका है, जिसके बारे में रोज अफ़वाह उड़ती है कि अब नंबर लगेगा,वही नेता सबसे ज्यादा बोल रहा है, और जिन नेताओं पर कोई जांच नहीं,कोई एजेंसी नहीं,कोई व्यक्तिगत खतरा नहीं वे या तो मौन व्रत में हैं, या सत्ता के साथ सभ्य दूरी बनाकर चल रहे हैं, यह चुप्पी डर की नहीं, स्वार्थ की उपज है।

कांग्रेस में आज सबसे सुरक्षित वही है जो कुछ नहीं बोलता- आज कांग्रेस में एक अघोषित फ़ॉर्मूला चल रहा है जो जितना चुप, वह उतना सुरक्षित और इस फ़ॉर्मूले में भूपेश बघेल फिट नहीं बैठते,क्योंकि वह सवाल पूछते हैं, और सवाल सत्ता को सबसे ज्यादा चुभते हैं।

सवाल सीधा है, जवाब कड़वा- अगर कांग्रेस में सिर्फ एक नेता बोल रहा है, सिर्फ़ एक नेता लड़ रहा है,सिर्फ़ एक नेता जोखिम उठा रहा है,तो फिर बाकी नेता किस बात के हैं? क्या विपक्ष सिर्फ़ भूपेश का निजी शौक़ बन गया है? या फिर कांग्रेस ने सामूहिक रूप से तय कर लिया है कि जो फँस रहा है, वही लड़े हम अगली सरकार में देखेंगे।

सत्ता गई, सलाहकार भी गए क्या यही है छत्तीसगढ़ की असली राजनीति?- छत्तीसगढ़ की राजनीति में आज एक दृश्य बेहद साफ़ दिखाई देता है सत्ता के साथ भीड़ आती है,सत्ता जाते ही सन्नाटा छा जाता है,यह दृश्य किसी आम नेता का नहीं,एक ऐसे नेता का है जो कुछ समय पहले तक प्रदेश का मुख्यमंत्री था भूपेश बघेल,जब सत्ता थी,तब सलाहकार भी थे मुख्यमंत्री रहते हुए भूपेश बघेल के इर्द-गिर्द सलाहकारों की एक पूरी फौज थी, कोई रणनीतिकार कहलाता था,कोई मीडिया मैनेजर,कोई पॉलिसी एक्सपर्ट, कोई 'ऑल राउंडर' इन सलाहकारों के नाम चलते थे, फोन व्यस्त रहते थे, दफ्तरों में रुतबा था,अफसर,नेता, कारोबारी सब संपर्क में रहते थे,कांग्रेस सरकार के दौर में ये सलाहकार खुद सत्ता का प्रतीक बन चुके थे,आज वही सलाहकार कहां हैं? आज हालात बदले हैं,भूपेश बघेल मुख्यमंत्री नहीं हैं,वह विपक्ष में हैं,संघर्ष में हैं,जांच,दबाव और राजनीतिक हमलों से घिरे हुए हैं,और ऐसे समय में सवाल उठता है वे सलाहकार कहां हैं? क्या कर रहे हैं? किसके साथ हैं? जवाब चौंकाने वाला है किसी को नहीं पता,जो चेहरे कभी हर मीटिंग,हर रणनीति,हर बयान के केंद्र में रहते थे आज न वे भूपेश बघेल के आसपास हैं, न पार्टी की लड़ाई में दिखते हैं।

सत्ता के सलाहकार, संघर्ष के नहीं?- यह संयोग नहीं है,यह चरित्र है राजनीतिक सलाहकार संस्कृति का, सत्ता में हो तो सलाहकार,सत्ता गई तो दूरी,संघर्ष आया तो गुमनामी इनमें से अधिकांश,वैचारिक नहीं थे,प्रतिबद्ध नहीं थे,संगठन से जुड़े नहीं थे वे सिर्फ एक चीज से जुड़े थे वह है सत्ता से,और जैसे ही सत्ता गई,उनका 'राजनीतिक नैतिक दायित्व' भी चला गया,यही है स्वार्थ की राजनीति का असली चेहरा आज अगर भूपेश बघेल जांच एजेंसियों से घिरे हैं,व्यक्तिगत दबाव में हैं,राजनीतिक रूप से सबसे कठिन दौर में हैं,तो यह वही समय होता है, जब सच्चे साथी खड़े दिखते हैं, लेकिन यहाँ न सलाहकार हैं,न रणनीतिक टीम,न सत्ता-काल की चमक यह बताता है कि छत्तीसगढ़ की राजनीति में अब लोग नेता नहीं, सत्ता चुनते हैं, कांग्रेस ही नहीं,पूरी राजनीति का संकट यह समस्या सिर्फ़ कांग्रेस की नहीं है, यह समस्या है,राजनीतिक अवसरवाद की, सत्ता-आधारित वफ़ादारी की, और जब तक फायदा,तब तक साथ वाली संस्कृति की आज भूपेश बघेल के साथ जो हो रहा है,कल किसी और के साथ होगा, क्योंकि यहाँ नेता अस्थायी हैं, सत्ता स्थायी लालच है।

सरकारी एवं संवैधानिक पद

मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़ : दिसंबर 2018 - दिसंबर 2023 छत्तीसगढ़ के तीसरे मुख्यमंत्री,इस कार्यकाल में उन्होंने किसान केंद्रित योजनाओं,ग्रामीण अर्थव्यवस्था और प्रशासनिक हस्तक्षेप के लिए पहचान बनाई।

कैबिनेट मंत्री,छत्तीसगढ़ शासन (2000): राज्य गठन के बाद पहली सरकार (अजीत जोगी मंत्रिमंडल) में-
- राजस्व मंत्री
- लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री
- पुनर्वास मंत्री

कैबिनेट मंत्री, अविभाजित मध्य प्रदेश (1999) दिग्विजय सिंह सरकार में परिवहन मंत्री

राज्य मंत्री, अविभाजित मध्य प्रदेश (1998)
- मुख्यमंत्री से संबद्ध राज्य मंत्री
- जन शिकायत निवारण विभाग (स्वतंत्र प्रभार)

विधायक,पाटन विधानसभा : 1993, 1998, 2003, 2013, 2018 और 2023 छह बार जनता का भरोसा जीतना, उनकी जमीनी पकड़ का प्रमाण है।

विपक्ष के उपनेता, छत्तीसगढ़ विधानसभा : 2003 - 2008 भाजपा के 15 वर्षीय शासनकाल में सत्ता के विरुद्ध सबसे मुखर आवाज़ों में एक।

संगठनात्मक भूमिकाएँ : अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी 2014 - 2019

उनके नेतृत्व में कांग्रेस ने 15 साल बाद छत्तीसगढ़ में सत्ता में वापसी की—यह उनकी सबसे बड़ी संगठनात्मक उपलब्धि मानी जाती है।

राष्ट्रीय महासचिव, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

वर्तमान में पंजाब राज्य के प्रभारी

जिला अध्यक्ष, युवा कांग्रेस (दुर्ग) 1990 - 1994

उपाध्यक्ष, मध्य प्रदेश युवा कांग्रेस 1994 - 1995

अन्य महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ :

निदेशक, मध्य प्रदेश हाउसिंग बोर्ड 1993 - 2001

सदस्य, मध्य प्रदेश लोक लेखा समिति सहित अन्य संसदीय समितियाँ

भूपेश बनाम 'साइलेंट कांग्रेस' तुलना तालिका

मुद्दा	भूपेश बघेल	साइलेंट कांग्रेस
सत्ता में रहते समय	आक्रामक, सड़क-सदन दोनों में सक्रिय	सत्ता का सुख, संगठन गौण
सत्ता जाने के बाद	खुला विरोध, निरंतर बयान	खामोशी, रणनीतिक मौन
जांच/एजेंसी दबाव	ईडी-सीबीआई-पुलिस का सामना	लगभग शून्य
व्यक्तिगत नुकसान	बेटा जेल, राजनीतिक हमला	सुरक्षित, अप्रभावित
सरकार की नीतियों पर रुख	सीधा, तीखा, सार्वजनिक	अस्पष्ट या अनुपस्थित
किसान-आदिवासी मुद्दे	नियमित हस्तक्षेप	प्रतीकात्मक बयान
विपक्ष की भूमिका	फ्रंटफ़ुट पर	बैकफ़ुट पर
राजनीतिक जोखिम	सबसे अधिक	लगभग नहीं
लक्ष्य	सत्ता को जवाबदेह बनाना	'सही समय का इंतज़ार'
जनसंघर्ष	निरंतर	नाममात्र

एक नजर भूपेश बघेल के राजनीतिक जीवन पर- भूपेश बघेल का राजनीतिक सफर छत्तीसगढ़ की राजनीति में संघर्ष,संगठन और सत्ता–तीनों का प्रतिनिधित्व करता है। छात्र राजनीति से शुरू होकर वे प्रदेश के मुख्यमंत्री पद तक पहुँचे और आज भी कांग्रेस के सबसे प्रभावशाली चेहरों में गिने जाते हैं। उनका करियर केवल पदों की सूची नहीं, बल्कि विपक्ष में जूझने और सत्ता में निर्णय लेने की कहानी है।

अंतिम बात (जो शायद चुभे)- लोकतंत्र में सत्ता को सबसे ज्यादा डर उस विपक्ष से लगता है जो चुप नही रहता, आज छत्तीसगढ़ में अगर सत्ता असहज है, तो उसकी वजह कोई संगठन नहीं, कोई सामूहिक रणनीति नहीं सिर्फ़ एक व्यक्ति की आवाज़ है, और अगर इतिहास ने कुछ सिखाया है, तो वह यह कि सत्ता कभी 'साइलेंट नेताओं' से नहीं बदलती, सत्ता बदलती है उन लोगों से जो मुश्किल में भी बोलने की हिम्मत रखते हैं, चाहें कांग्रेस समझे या न समझे भूपेश बघेल आज विपक्ष नहीं, विपक्ष की आखिरी रेखा बनते जा रहे हैं...

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2023-2025-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)